# व्यवस्थाविवरण

1 यरदन के पार जंगल में सूप के सामने
अराबा, पारान तोपेल के बीच और
लालान हसेरोत और दीजाहाल में इस्राएलियों
से कुछ बातें मूसा ने कहीं। 2 होरेब से
कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ तक पहुँचने में
ग्यारह दिन लगते हैं। 3 चालीसवें साल के
ग्यारहवें महीने के पहले दिन प्रभु ने मूसा
को कुछ निर्देष दिए थे। वे सब उसने लोगों
को बताए। 4 कहने का मतलब यह है कि
जब मूसा ने एमोरियों के राजा हेशबोन वासी
सीहोन और बाशान के राजा अगतारोत वासी
ओग को एद्रेई में कत्ल किया, 5 उसके
बाद यरदन के उस पार मोआब देश में
उसने नियमशास्त्र[a] को बताया। 6 “हमारे प्रभु
परमेश्वर ने होरेब के पास कहा था, तुम
इस पहाड़ के पास बहुत दिनों से रह रहे
हो, 7 इसलिए अब समय आ चुका है कि
यहाँ से रवाना हो। मैं चाहता हूँ कि तुम
एमोरियों के पहाड़ी देश, अराबा, नीचे के
देश, दक्षिण भाग, समुद्र के किनारे, लबानोन
पहाड़ तक और परात नामक महानद यानि
कि कनान तक चले जाओ। 8 उस देश को
मैंने तुम्हारे सामने रखा है। इसी के बारे में
अब्राहम, इसहाक, याकूब और पूर्वजों से
मैंने प्रतिज्ञा की थी, “कि यह मैं तुम्हें और
तुम्हारे वंश को दूँगा। अब तुम्हें जाना है
और उसे हथिया लेना है।” 9 उसी समय मैंने
यह भी कहा, तुम्हारी ज़िम्मेवारी मैं अकेले
नहीं उठा पाऊँगा, 10 क्योंकि संख्या में तुम
आकाश के तारों की तरह हो गए हो।
11 तुम्हारे पूर्वजों के प्रभु तुम्हें हज़ार गुणा बढ़ा
दें। तुम उनकी सारी भलाईयों को भी चख
सको। 12 लेकिन तुम्हारे झगड़े-रगड़े और
दूसरी ज़िम्मेंदारियों को संभालना मेरे लिए
असंभव है। 13 इसलिए अपने-अपने गोत्र में
से अक्लमन्द, समझदार और मशहूर लोगों
का चुनाव करो। उनके ऊपर तुम्हें मैं मुखिया
ठहराऊँगा। 14 तब तुम बोले, “तुम्हारे कहने
के अनुसार हम करेंगे।” 15 इसलिए मैंने
हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास और
दस-दस के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रों के
सरदार भी रखे 16 उस समय तुम्हारे न्यायियों
को मैंने आदेश दिया था, “तुम अपने भाईयों
के मुकदमों को निबटाया करो। यह सब
बिना निष्पक्षता के पड़ोसियों और परदेशियों
के साथ करना। 17 बड़ों-छोटों में भेद मत
करना, मुँह देखा इन्साफ़ मत करना। इन्साफ़
प्रभु का काम है। जो मुकदमें मुश्किल हों,
उन्हें मेरे पास लाया करना। 18 उसी समय
मैंने तुम्हारी ज़िम्मेंदारियों बता दीं। 19 “हम
होरेब से निकल कर अपने प्रभु के कहने के
अनुसार अचानक जंगल में से गुज़रे। 20 वहाँ
मैंने तुम से कहा, “तुम एमोरियों के पहाड़ी
देश तक आ चुके हो, जिसे हमारे प्रभु हमें
देने वाले हैं। 21 इसलिए उस पर चढ़ो और
अपने अधिकार में कर लो। तुम डरो मत
और न घबराओ। 22 तभी तुम लोग मेरे पास
आए और कहने लगे, “अपने से पहले हम
आदमियों को भेजेंगे। ये लोग जाँच पड़ताल
कर हमें बताएँगे कि हमें कौन से रास्ते से
जाना है। 23 यह बात मुझे अच्छी लगी और
मैंने बारह आदमियों को चुना। 24 पहाड़ पर
जाने के बाद एशकोल नाले तक पहुँचकर
उन्होंने जानकारी ले ली। 25 उस देश के फलों

[a] 1.5 व्यवस्था

में से वे लाए और हमें समाचार दिया, “हमारे
प्रभु जो देश हमें दे रहे हैं, वह बहुत बढ़िया
है।” 26 “फिर भी तुम वहाँ जाना नहीं चाहते थे
और विरोध करते हुए, 27 अपने-अपने तम्बू
में यह कह कर कुड़कुड़ाने लगे,“प्रभु की
हम से दुश्मनी है। इसीलिए वह हमें मिस्र
से निकाल कर लाए हैं, ताकि एमोरियों से
हमें मरवा डालें। 28 हम जाएँ तो कहाँ? हमारे
भाईयों ने हमें डरा दिया है कि वहाँ के लोग
हम से बड़े और लम्बे हैं। वहाँ के शहर बड़े
हैं। उनकी शहरपनाह आकाश चूमती है। हम
ने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा है। 29 मैं
तुम से बोला, “उनकी वजह से डरो मत”।
30 जो प्रभु तुम्हारी अगुवाई कर रहे हैं, वही
तुम्हारी ओर से लड़ेंगे। मिस्र में भी उन्होंने
ऐसा किया था। 31 तुम्हारा जंगल का भी यह
अनुभव था कि जिस तरह एक पिता अपने
बेटे को गोद में उठाए ले चलता है, उसी तरह
हमारे प्रभु हमें उठा कर चलते रहे हैं, 32 इसके
बावजूद तुमने उन पर भरोसा नहीं किया।
33 वह तुम्हारे आगे-आगे इसलिए चलते रहे
कि तुम्हारे ठहरने के लिए जगह ढूँढे। वह
दिन में बादल और रात में आग में प्रगट होकर
रहे, ताकि तुम्हारा मार्गदर्शन करें। 34 लेकिन
तुम्हारी वे बातें सुन कर प्रभु का गुस्सा भड़क
गया 35 और उन्होंने यह तय किया कि इस
पीढ़ी में का एक व्यक्ति भी प्रतिज्ञा किए हुए
देश को देखने न पाएगा 36 केवल यपुत्रे का
बेटा कालेब उसे देख पाएगा जिस ज़मीन पर
उसने अपने पैर रखे हैं उसे मैं उसको और
उसके वंश को दूँगा, इसलिए कि पूरे मन
से वह मेरी बात मानता है 37 तुम्हारे कारण
मुझ से भी प्रभु को गुस्सा आया और कहा,
“तुम भी वहाँ प्रवेश नहीं करोगे। 38 नून का
बेटा यहोशू जो तुम्हारा सेवक है, वह प्रवेश
करेगा। इसलिए तुम उसकी हिम्मत बढ़ाना।
वही इस्राएलियों को वहाँ प्रवेश कराएगा
39 तुम्हारे परिवार जिन के बारे में तुम्हारा
ख्याल था कि उन्हें लोग लूट में ले जाएँगे।
यह भी कि ये बच्चे जिन्हें अभी भले बुरे का
ज्ञान नहीं है, वे वहाँ दाखिल होंगे। उन्हें मैं
यह देश दूँगा और वे उसके अधिकारी होंगे।
40 लेकिन तुम लोग घूम कर चल पड़ो और
लाल समुद्र के रास्ते से जंगल की ओर जाओ
41 तब तुम कह रहे थे, हम ने प्रभु के खिलाफ़
गुनाह किया है। हम अब प्रभु के आदेश के
अनुसार हमला करेंगे और लड़ेंगे।” तभी तुम
अपने हथियार बाँधकर बिना सोचे-समझे
पहाड़ पर चढ़ने के लिए जोश में आ गए।
42 तब प्रभु ने कहा, “उनको बोलो, कि ऐसा
न करें, क्योंकि मैं तुम्हारे बीच में नहीं हूँ।
इसलिए तुम लोग हार सकते हो 43 मैंने यह
कह दिया था, लेकिन तुम अड़े रहे। 44 वहाँ
पहाड़ी एमोरी तुम से मुकाबला करने निकले
और सेईर देश के होर्मा तक तुम्हें मारते-मारते
चले आए 45 लौटने के बाद तुमने रोना-पीटना
मचा दिया, लेकिन प्रभु ने सब अनसुना कर
दिया। 46 कादेश में तुम बहुत दिन तक रहे,
यहाँ तक कि एक ज़माना गुज़र गया।

2 “तब उस आदेश को पाकर जो प्रभु से
मुझे मिला था, हम घूम कर चल दिए
और लाल समुद्र के रास्ते से जंगल की ओर
गए। हम बहुत दिनों तक सेईर पहाड़ के
बाहर चलते रहे 2,3 फिर प्रभु ने मुझ से कहा,
“इस पहाड़ के बाहर चलते-चलते तुम्हें बहुत
दिन हो गए हैं अब घूम कर उत्तर की ओर
चलो। 4 इस्राएलियों को तुम यह हुक्म दो,
कि वे सेईर के निवासी अपने भाई एसावियों
की सीमा के पास से होकर जाने वाले हों।
वे लोग तुम से डर जाएँगे, इसलिए बहुत
सावधान रहना। 5 उन्हें छेड़ना नहीं, क्योंकि

उनके देश में से मैं तुम्हें पाँव रखने का स्थान
तक न दूँगा। इस कारण कि मैंने सेईर पहाड़
एसावियों के हाथ में कर दिया हैं। [6] उन
से तुम खाना खरीद कर खा पाओगे और
पानी भी खरीद कर पी सकोगे। [7] तुम्हारा
प्रभु परमेश्वर तुम्हारे हाथों के कामों के बारे
में तुम्हें आशीष देते आए हैं। इस जंगल में
तुम्हारे संग तुम्हारे प्रभु रहे हैं और तुम्हें कभी
कमी नहीं हुयी है। [8] हम सेईर के रहने वालों
और अपने भाई एसावियों के पास से होते हुए
अराबा के रास्ते और एलत और एश्योनगेबेर
से होकर गुज़रे। [9] प्रभु का निर्देष यह था कि
हम मोआबी लोगों को परेशान न करें और न
ही लड़ाई छेड़ें। मैं उनके देश में से कुछ भी
तुम्हारे अधिकार में न करूँगा क्योंकि मैंने
आर को लूनियों के वंशजों के अधिकार में
किया है। [10] पुराने समय में वहाँ एमी लोग रहा
करते थे। वे लोग अनाकियों की तरह बड़े,
कद में ऊँचे और गिनती में अधिक थे [11] वे
लोग अनाकियों की तरह रपाई माने जाते थे।
मोआबी उन्हें एमी कहते हैं। [12] प्राचीन समय
में सेईर में होरी लोग रहा करते थे। लेकिन
एसावियों ने उन्हें देश से खदेड़ दिया। उन्हें
बर्बाद कर खुद वे वहाँ बस गए। इसी तरह
से इस्राएलियों ने अपने अधिकार के देश में
किया था। [13] अब तुम लोग निकल कर जेरेद
नदी को पार करो। तब हम लोगों ने जेरेद
नदी पार की। [14] हमारे कादेशबर्ने को छोड़ने
से लेकर जेरेद नदी पार होने तक अड़तीस
साल गुज़र गए। इसी बीच प्रभु के शब्द के
अनुसार उस पीढ़ी के सभी फ़ौजी छावनी में
से बर्बाद हो गए। [15] जब तक वे बर्बाद न
हुए तब तक प्रभु का हाथ उन्हें छावनी में
से मार डालने के लिए उनके खिलाफ़ काम
करता रहा [16] जब सभी धीरे-धीरे खत्म हो
गए [17,18] तब प्रभु ने कहा, “अब मोआब की
सरहद आर को पार करो, [19] अम्मोनियों के
पास पहुँचने पर उन्हें तकलीफ़ मत देना।
मैं अम्मोनियों के देश में से तुम्हें कुछ भी
न दूँगा, क्योंकि मैंने पहले ही से उसे लूत
के वंशजों के सुपुर्द कर दिया है [20] उन्हें भी
रपाई समझा जाता था, क्योंकि पुराने समयों
में रपाई, जिन्हें अम्मोनी लोग जमजुम्मी कहते
थे, वहाँ बसते थे। [21] वे लोग अनाकियों की
तरह ताकतवर कद में ऊँचे और संख्या में
अधिक थे। लेकिन प्रभु ने इन को अम्मोनियों
के देखते-देखते, खत्म कर डाला और उन्होंने
उनको उस देश से खदेड़ दिया और उनकी
जगह खुद रहने लगे [22] जिस तरह से सेईर के
रहने वाले एसावियों ने सामने से होरियों को
बर्बाद किया और उन्होंने उसे निकाल दिया
और आज तक उनकी जगह पर वे स्वयं रहते
हैं। [23] इसी तरह अव्वियों को जो अज्जा नगर
तक गाँवों में बसे थे, उनको कप्तोरियों ने जो
कप्तोर से निकले थे, मार डाला और उनके
स्थान पर स्वयं रहने लगे। [24] अब तुम लोग
यहाँ से चल पड़ों और अर्नोन के नाले के पार
जाओ। हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को
तुम्हारे वश में कर देता हूँ। उस राजा के साथ
मुठभेड़ करो और देश को अपने अधिकार
में लाना शुरू कर दी। [25] दुनिया में रहने वाले
सभी लोगों के मन में आज के दिन से डर और
घबराहट पैदा करूँगा। तुम्हारे बारे में सुन
कर वे काँप जाएँगे। [26] “इसलिए मैंने कदेमोत
नाम के जंगल से हेशबोन के राजा सीहोन के
पास सन्धि की बात शुरू करने संदेशवाहक
भेजे। [27] मुझे अपने देश में से होकर जाने की
अनुमति दे दी। मैं राजपथ से होकर चला
जाऊँगा और इधर-उधर न मुड़ूँगा। [28] तुम
पैसा लेकर मेरे हाथ खाने की चीजें देना और
पैसे से ही पानी देना, केवल मुझे अपने यहाँ
से गुज़र जाने दो। [29] जिस तरह से सेईर के

निवासी एसावियों ने और आर के निवासी
मोआबियों ने मेरे साथ व्यवहार किया, वैसा
तुम भी मेरे साथ करो। इस तरह मैं यरदन
को पार कर उस देश में पहुँच जाऊँगा, जिसे
हमारे प्रभु ने हमें दिया है। 30 लेकिन हेशबोन
के राजा सीहोन ने हमें अपने देश में से होकर
जाने न दिया, क्योंकि उस का मन सख्त हो
गया था, इसलिए आज वह तुम्हारे अधीन है।
31 मुझ से प्रभु ने कहा, “सुनो, मैं देश समेत
सीहोन को तुम्हारे अधिकार में करने पर हूँ।
धीरे-धीरे उस देश को अपने वश में करते
जाओ। 32 तभी सीहोन अपनी फ़ौज लेकर
आया। हमला करने के लिए वह यहस तक
आ गया। 33 हमारे प्रभु परमेश्वर ने उसको
हमारे द्वारा हरवा दिया। हम ने उसके बेटों
और सारी फ़ौज सहित मार डाला। 34 तभी
हम ने उसके सब नगरों पर नियंत्रण कर
लिया और स्त्रियों-बच्चों तक को नाश किया
35 उनके जानवरों को हम ने ले लिया और
लोगों के सामान को भी 36 अर्नोन के नाले
के छोर वाले अरोएर नगर से लेकर, गिलाद
तक कोई ऐसा नगर ऊँचा न रहा, जो हमारा
सामना कर सकता था, क्योंकि हमारे प्रभु
परमेश्वर ने सभी को हमारे अधिकार में कर
दिया 37 हम अम्मोनियों के देश के पास, वरन्
यब्बोक नदी के उस पार जितना देश फैला है
और पहाड़ी देश के नगर जहाँ जाने से हमारे
प्रभु परमेश्वर ने हमें मना किया था, हम नहीं
गए।

3 “तब हम मुड़े और बाशान के रास्ते से
चढ़ गए। बाशान का राजा आगे अपनी
पूरी फ़ौज के साथ हमारा मुकाबला करने
आया ताकि एद्रेई में युद्ध करे। 2 प्रभु का
वचन मेरे पास पहुँचा, मत डरो, क्योंकि मैंने
उसकी सारी फ़ौज को देश सहित तुम्हारे
हाथ में कर दिया है। जिस तरह से तुमने
हेशबोन के निवासी एमोरियों के राजा सीहोन
से किया है, वैसा ही उस से भी करना। 3 इस
तरह हमारे प्रभु परमेश्वर ने पूरी फ़ौज समेत
बाशान के राजाओं को भी हमारे हाथ में
कर दिया। हम उसे यहाँ तक मारते गए कि
एक भी न बच सका। 4 उसी समय हम ने
उनके सारे नगरों को ले लिया। इसी प्रकार
अर्गोब का पूरा देश जो बाशान में आगे के
राज्य में था और जिस में साठ नगर थे,
वह हमारे अधिकार में आ गया 5 ये सभी
नगर मज़बूत थे। उनकी ऊँची शहरपनाह,
फ़ाटक और बेड़े थे। इन को छोड़कर कुछ
ऐसे शहर थे, जिन की शहरपनाह नहीं की
थी। 6 जिस तरह हम ने हेशबोन के राजा
सीहोन के नगरों से किया था, वैसा ही हम
ने इन नगरों से भी किया 7 घरेलू पशुओं और
नगरों में जितना सामान था वह ले लिया
8 इस तरह हम ने यर्दन नदी के इस पार रहने
वाले एमोरियों के दोनों राजाओं के हाथ से
अर्नोन नाले से लेकर हेर्मोन पहाड़ तक के
देश को ले लिया 9 हेर्मोन को सीदोन के लोग
सिय्योन और एमोरी लोग सनीर कहा करते
थे। 10 देश के सभी नगर, साराह गिलाद,
सल्का और एद्रेई तक जो आगे के राज्य
के नगर थे, साराह बाशान हमारे अधिकार
में आ गए। 11 जो रपाई शेष रह गए, उन
में से सिर्फ बाशान का राजा आगे बच गया
था। उसकी लोहे की खाट अम्मोनियों के
रब्बा नगर में पड़ी है। उनकी लम्बाई नौ हाथ
की और चौड़ाई चार हाथ की है। 12 अपने
अधिकार में लिया गया क्षेत्र यह था - अर्नोन
के नाले के किनारे वाले अरोएर नगर से
लेकर सब नगरों सहित गिलाद के पहाड़ी
देश का आधा भाग, जिसे मैंने रूबेनियों और
गादियों को दे दिया। 13 गिलाद का शेष भाग,

पूरा बाशान अर्थात् अर्गोब का पूरा देश जो
आगे के राज्य में था, इन को मैंने मनश्शे
के आधे गोत्र को दे दिया[a] 14 मनश्शेई याईर
ने गशूरियों और माकावासियों की सरहद
तक अर्गोन का पूरा देश ले लिया। साथ
ही बाशान के नगरों का नाम अपने नाम
पर हब्बो याईर रखा) 15 गिलाद देश मैंने
नाकीर को दे दिया 16 रूबेनियों और गादियों
को मैंने गिलाद से लेकर अर्नोन के नाले
तक का देश दे दिया। 17 किन्नेरेत से लेकर
पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के
ताल तक, जिसे खारा ताल भी कहते हैं,
अराबा और यर,दन के पूर्व की ओर का सारा
इलाका भी मैंने उन्हें दे दिया। 18 "उस समय
मैंने आदेश दिया था, "तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
ने तुम्हें यह देश दिया है कि उसे ले लो।
तुम सभी सैनिक हथियारों से लैस होकर
अपने भाई इस्राएलियों के आगे-आगे चलो
19 लेकिन तुम्हारी स्त्रियाँ, बच्चे और ढेर से
जानवर रह जाएँ। 20 जब प्रभु तुम्हारे भाईयों
को वैसा आराम दें जैसा उन्होंने तुम्हें दिया है
और वे उस देश के अधिकारी हो जाएँ, जो
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर उन्हें यर्दन के पार देते
हैं, तभी तुम भी अपने-अपने अधिकार की
ज़मीन, जो मैंने तुम्हें दी है, लौटोगे। 21 उसी
समय मैंने यहोशू को सावधान करते हुए
कहा, "इन दोनों राजाओं के साथ प्रभु ने
क्या किया, यह तुम जानते हो। जिन में तुम
पार होकर जाओगे, प्रभु इन सभी राज्यों से
करेंगे। 22 तुम उन से डरना नहीं क्योंकि जो
तुम्हारी ओर युद्ध कर रहे हैं वह तुम्हारे प्रभु
हैं। 23 "तभी मैंने गिड़गिड़ाकर प्रभु से प्रार्थना
की", 24 हे प्रभु परमेश्वर, आप अपने दास
को अपनी महिमा और शक्तिशाली दिखा रहे
हैं। स्वर्ग या पृथ्वी में कौन ऐसा देवता है
जो आपकी तरह काम और पराक्रम दिखा
सके 25 इसलिए मुझे पार जाने की अनुमति
दें कि यर्दन नदी के उस पार बढ़िया देश को
अर्थात् उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को
देख सकूँ। 26 लेकिन तुम लोगों की वजह से
प्रभु मुझ से गुस्सा थे। उन्होंने उत्तर दिया,
"बस करो। इस बारे में तुम मुझ से कभी
बात मत करना। 27 पिसगा पहाड़ की चोटी
पर चढ़ जाओ। फिर चारों दिशाओं की ओर
दृष्टि डालो, क्योंकि तुम इस यर्दन नदी के
उस पार न जा सकोगे 28 यहोशू को आदेश दो
और उसकी हिम्मत बंधाओ। वही इन लोगों
को आगे-आगे ले जाएगा। जिस देश को तुम
देखोगे यहोशू ही उन लोगों का निज भाग करा
देगा।" 29 इसके बाद हम बेतमोर के सामने
की घाटी में ठहरे रहे।

4 "हे इस्राएल, जो विधियाँ और नियम मैं
तुम्हें सिखाना चाह रहा हूँ, उन्हें ध्यान से
सुन कर, वैसा ही करो। यह तुम्हारे जीवन में
मददगार साबित होगा। साथ ही तुम प्रतिज्ञा
किए हुए देश के हकदार हो सकोगे। 2 मेरे
दिए निर्देष में कुछ कम न करना, न ही
बढ़ाना। तुम्हारे प्रभु की आज्ञा मानते रहना।
3 बालपोर की पूजा के कारण प्रभु ने किस
तरह से लोगों को मार डाला था, 4 लेकिन तुम
जो प्रभु के साथ लिपटे रहे, आज तक जीवित
हो। 5 प्रभु परमेश्वर की आज्ञा के मुताबिक
तुम्हें सारे तौर-तरीके[b] सिखाए गये हैं, ताकि
जिस भूमि के अधिकारी तुम होने वाले हो,
उसमें तुम प्रभु की इच्छा में चलो 6 दूसरे
पड़ोसी देशों के सामने तुम्हारी बुद्धि और
समझ इसी से दिखायी देगी, अर्थात् वे तुम्हें
प्रभु भय में चलते देख कर कहेंगे - निश्चिय ये
लोग बड़े बुद्धिमान और समझदार हैं 7 देखो,

[a] **3.13** बाशान रपाईयों का इलाका कहलाता है।
[b] **4.5** नियम-आज्ञाएँ

ऐसा कौन सा बड़ा देश है जिस का प्रभु इतने पास रहता हो, जितने पास हमारे प्रभु परमेश्वर हैं? 8 ऐसा कौन सा महान देश है, जिस की विधियाँ और आज्ञाएँ इतनी सच्ची और लाभकारी हैं, जैसे प्रभु द्वारा दी गयी हैं। 9 यह ज़रूरी है कि तुम अपने बारे में सावधान रहो। अपने मन की देख-भाल[a] करो। कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुमने अपनी आँखों से देखी हैं, उन्हें भूल जाओ। और वे सदा के लिए तुम्हारे मन से चली जाएँ। लेकिन तुम अपने बच्चों और नाती-पोतों को वह सब सिखाना। 10 मुख्य वह बात सिखाना कि जब तुम होरेब के पास अपने प्रभु के सामने खड़े हुए थे। उस समय प्रभु ने मुझ से कहा था, ‘लोगों को मेरे पास इकट्ठे करो ताकि मैं उन्हें वचन सुनाऊँ। उनके सुनने और सीखने से उनका जीवन पृथ्वी पर उद्देश्यपूर्ण[b] रहेगा। ये बातें उन्हें अपने बच्चों को भी सिखानी चाहिए। 11 तभी तुम पहाड़ के पास खड़े हो गए। उस समय वह पहाड़ आग से धधक रहा था। उसकी लपटें आकाश तक पहुँच रही थीं। पहाड़ के चारों और अँधेरा और बादल छाए हुए थे। 12 उसी आग के बीच में से प्रभु की आवाज़ सुनायी दी। किसी का रूप वहाँ न दिखा, केवल आवाज़ ही सुनायी पड़ी। 13 अपनी वाचा की दसों बातों को बता कर उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें माना जाए। उन बातों को प्रभु ने पत्थर की पटियाओं पर लिख भी डाला। 14 उसी समय प्रभु ने मुझे वह सब सिखाने की आज्ञा दी। यह भी उनके इच्छा थी कि उस नए देश में तुम उनकी मानो। 15 इसलिए तुम्हें अपने बारे में सावधानी बरतनी है। इसलिए कि होरेब के अनुभव के समय तुमने कुछ देखा नहीं था, केवल प्रभु ने आग के बीच से बातचीत की थी। 16 कहीं ऐसा न हो कि किसी नर या नारी की मूर्ति बनाकर तुम बुरे आचरण में फँस जाओ, 17 चाहे वह किसी जावर की हो या चिड़िया की, 18 तुम गुमराह होकर किसी जानवर पक्षी पृथ्वी पर रेंगने वाले जन्तु या जल प्राणी की मूर्ति न बनाना 19 या चाँद, तारों को दण्डवत् न करने लगना न ही उनका गुणानुवाद करना 20 प्रभु तुम्हें लोहे की भट्टी जैसे मिस्र देश से निकाल लाए हैं, ताकि तुम केवल उनकी प्रजा ठहरो 21 तुम्हारे कारण प्रभु ने गुस्से में मुझ से शपथ खायी थी, कि तुम यरदन के उस पार न जा सकोगे। जो समृद्ध देश प्रभु देने जा रहे हैं, उसमें तुम दाखिल न हो पाओगे 22 मैं तो इसी देश में मरने वाला हूँ। तुम सब तो उस देश का आनन्द उठाओगे 23 इसलिए ध्यान देना कहीं तुम वाचा को भूल न जाना, जिसे प्रभु ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कहीं तुम किसी चीज की मूरत खोद कर न बना लेना, जिस की मनाही प्रभु ने की है। 24 तुम्हारे प्रभु भस्म कर देने वाली आग हैं। वह जलन रखते हैं। 25 यदि उस देश में बहुत समय रहते-रहते तुम बिगड़ जाओ और कोई मूर्ति बना कर इस बुराई से प्रभु को नाखुश करो, 26 तो मैं आज आकाश-पृथ्वी को तुम्हारे खिलाफ़ गवाह रख कर कहता हूँ, कि जिस देश के अधिकारी होने के लिए तुम यरदन पार जाने को हो, उसमें अधिक समय न रहोगे। तुम शीघ्र ही बर्बाद हो जाओगे। 27 प्रभु तुम्हें देश-देश के लोगों में बिखेर देंगे। जिन देशों में तुम्हें प्रभु पहुँचाएँगे, वहाँ तुम्हारी गिनती थोड़ी ही रह जाएगी 28 तुम वहाँ पर लकड़ी और पत्थर के देवताओं की उपासना करोगे। ये देवता न देखते हैं, न सुनते हैं। न ही ये खाते हैं और न ही सूँघते हैं। 29 लेकिन यदि

[a] **4.9** चौकीदारी [b] **4.10** लाभकारी

तुम वहाँ भी प्रभु के लिए भूख-प्यास रखोगे,
तृप्त होगे। लेकिन इस शर्त पर कि पूरे मन
और प्राण से उन्हें चाहो। 30 अन्त के समय
में जब तुम समस्याओं में फँस जाओ, तब
तुम अपने प्रभु परमेश्वर की ओर पूरे मन
से लौटना और उन्हीं की मानना। 31 क्योंकि
तुम्हारे प्रभु दयालु हैं। वह तुम्हें न ही छोड़ेंगे
और न ही बर्बाद करेंगे। उस वाचा को जो
उन्होंने पूर्वजों से बान्धी है, उसे वह भूलेंगे
नहीं। 32 जब से प्रभु ने मनुष्य को पैदा किया
और पृथ्वी पर रख छोड़ा, तब से लेकर तुम
अपने उत्पन्न होने के दिन तक की बातें पूछो।
तुम आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक
की बातें पूछो। क्या इतनी बड़ी बात कभी
हुयी क्या सुनने में आयी है? 33 क्या कोई
लोग कभी प्रभु की आवाज़ आग के बीच सुन
कर जीवित रहे होंगे? 34 फिर क्या प्रभु ने और
किन्हीं लोगों को दूसरे देश में से निकालते
समय कमर बाँधकर परीक्षा, चिन्ह, अजीब
काम, युद्ध, ताकतवर हाथ और बढ़ाई हुई
भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किए, जैसे
तुम्हारे प्रभु ने तुम्हारे सामने मिस्र में किए
थे? 35 ये सब कुछ तुम्हें दिखाया गया है,
ताकि तुम यह जान जाओ कि प्रभु परमेश्वर
को छोड़ और कोई है ही नहीं। 36 आकाश
से तुम्हें वाणी सुनायी गयी थी, ताकि तुम्हें
शिक्षा मिले। पृथ्वी पर आग थी और उस में
से निकलते शब्द। 37 तुम्हारे पूर्वजों के लिए
प्रेम के कारण उनके आने वाले वंश को चुना।
अपनी बड़ी शक्ति के द्वारा मिस्र से इसलिए
निकाला, 38 कि तुम से बड़े और सामर्थी
लोगों को तुम्हारे आगे से निकाल कर तुम्हें
उनके देश पहुँचाए। वहाँ पहुँचाकर वह भूमि
तुम्हारे लिए दे दी थी। 39 इसलिए यह जान लो
कि ऊपर आकाश में और नीचे पृथ्वी पर प्रभु
ही प्रभु हैं, और कोई नहीं। 40 उनके दिए गए
मार्गदर्शन का सम्मान करना, जिस का बखान
मैं आज कर रहा हूँ। तुम्हारा और तुम्हारे बाद
आने वाली पीढ़ियों का भला इसी में होगा
और तुम अपने दिए गए देश में बहुत समय
तक रह सकोगे।” 41 मूसा ने यर्दन नदी के
पार पूरब की ओर तीन नगर अलग किए गए।
42 जो बिना जाने-बूझे या बिना नफ़रत से यदि
किसी का खून कर डाले तो इन में से किसी
नगर में जा बसे। 43 शबेनियों का बेसेर नगर
जो जंगल के समथर देश में हैं और गादियों
के गिलाद का रामोत तथा मनश्शेइयों के
बागान का गोलान 44 जो नियम-आज्ञाएँ मूसा
ने इस्राएलियों को दी वे यह हैं: 45 यही वे
चेतावनियाँ और नियम हैं, जिन्हें मूसा ने
इस्राएलियों को तब दीं, जब वे मिस्र की
गुलामी से छूटे थे 46 यर्दन के पार बेतपोर
के सामने वाली तराई में एमोरियों के राजा
हेशबोन वासी एमोरियों के राजा सीहोन के
देश में, जिसे मूसा तथा इस्राएलियों ने मिस्र
से निकल आने के बाद मार डाला। 47 इसके
बाद उन लोगों ने उसके तथा बाशान के राजा
आगे अर्थात् एमोरियों के दोनों राजाओं के
देशों को अपने वश में कर लिया जो पूर्व की
ओर यर्दन नदी के पार थे। 48 अर्थात् अर्नोन
की घाटी के तट पर स्थिर अरोएर से सिओन
अर्थात् हेर्मोन पहाड़ तक के क्षेत्र को, 49 और
उसके साथ पूर्व में यर्दन नदी के पार पिसगा
की ढलान के नीचे अराना के समुद्र तक के
सारे अराबा को

5 सभी इस्राएलियों को मूसा ने बुलवाया
और कहा, “जो विधियाँ और नियम
मैं तुम्हें बता रहा हूँ, उन्हें ध्यान से सुनो।
उन्हें सीखना और मानना। 2 हमारे प्रभु ने
हमारे साथ होरेब पहाड़ पर वाचा बाँधी
थी 3 यह वाचा प्रभु ने मात्र हमारे पूर्वजों

से नहीं, लेकिन हम सभी लोगों से बाँधी
थी। 4 पहाड़ उस समय आग से धधक रहा
था जब प्रभु ने तुम लोगों से बातचीत की
थी। 5 तुम आग से इतना डर गए थे, कि
पहाड़ पर चढ़ने की हिम्मत नहीं की। इसलिए
तुम्हारे और प्रभु के बीच मैं खड़ा रहा कि
उनकी कही बातों को तुम तक पहुँचाऊँ।
6 उन्होंने कहा, “तुम्हारा प्रभु जो तुम्हें गुलामी
के घर या मिस्र में से निकाल लाया है, वह
मैं ही हूँ। 7 तुम मेरे अलावा दूसरों को प्रभु
करके स्वीकार न करना। 8 तुम खुद के लिए
कोई मूर्ति न बनाना, न ही किसी वस्तु की
प्रतिमा जो आकाश, पृथ्वी या पानी में पायी
जाती है, 9 उनके सामने न तो सिर झुकाना,
न इबादत करना, क्योंकि मैं तुम्हारा प्रभु
परमेश्वर हूँ, जो जलन रखता है। जो लोग
मुझ से दुश्मनी रखते हैं, उनके बेटों, पोतों
और परपोतों तक उनके बापदादों के गुनाह
की सज़ा पहुँचती है। 10 मुझ से जो लोग
लगाव[a] रखते हैं और मेरी कही हुयी बातों
को करते हैं, उन हज़ारों पर दया बरसाता हूँ।
11 तुम अपने प्रभु परमेश्वर का नाम बेकार
में ही न लेना। जो व्यक्ति प्रभु के नाम को
बिना मतलब लिया करता है, वह अपराधी
ठहरेगा। 12 ‘तुम आराम दिन को दूसरे दिनों
से अलग[b] मानना, जिस को मानने की आज्ञा
मुझ ही से मिली है।’ 13 अपना सारा काम
मेहनत से छेः दिन में करना, 14 सातवाँ दिन
आराम का दिन है। इस दिन तुम, तुम्हारे
बेटी-बेटियाँ, गुलाम जानवर या परदेशी लोग
जो तुम्हारे फ़ाटक के अन्दर हों, आराम करें।
15 हाँ, यह बात याद रहे, कि जिस देश में
तुम लोग गुलाम थे, वहाँ से प्रभु परमेश्वर
तुम्हें अपनी ताकतवर बाजुओं से निकाल
ले आए थे। 16 अपने माता-पिता को इज्ज़त
देना, जिस से जो देश तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
तुम्हें देते हैं, उसमें तुम लम्बे अरसे तक रह
सको और सुखी भी रहो 17 तुम खून मत
करना 18 तुम व्यभिचार मत करना 19 चोरी से
दूर रहना 20 किसी के खिलाफ़ झूठी गवाही
से परे रहना 21 तुम किसी की पत्नी, घर,
खेत, नौकर चाकर, जानवर या किसी और
वस्तु को पाने की लालसा को मन में बने न
रहने देना। 22 उस पहाड़ पर गहरे अन्धियारे
में आग और बादल के बीच में से ऊँची
आवाज़ में ये बातें प्रभु परमेश्वर ने कहीं।
पत्थर की तख्तियों पर इन बातों को लिखा
और वे तख्तियाँ मुझे दे दीं। 23 जब वह
पहाड़ आग से धधक रहा था तुमने उनकी
आवाज़ को सुना। सुन कर तुम और तुम्हारे
कबीलों के सब खास पुरुष और बुज़ुर्ग मेरे
निकट आए। 24 वे सभी कहने लगे, ‘हमारे
प्रभु परमेश्वर ने हम सभी को अपनी रौनक
और महिमा दिखा दी है। हम ने आग में से
उनकी आवाज़ को आते भी सुन लिया है।
हम ने यह नयी बात भी आज सीख ली है,
कि प्रभु की आवाज़ सुनने के बावजूद भी
इन्सान ज़िन्दा रहता है। 25 तो अब हम क्यों
मरें? क्योंकि ऐसी बड़ी ज्वाला से तो हम
बर्बाद हो जाएँगे। यदि हम अपने प्रभु की
वाणी फिर से सुनेंगे तो जीवित नहीं बचेंगे।
26 सभी लोगों में से कौन हैं वे जो हमारी तरह
आग में से प्रभु को बोलते हुए सुन कर बच
पाए होंगे 27 इसलिए तुम ही पास जाओ और
प्रभु से सुन कर आओ, कि वह क्या चाहते
हैं। हम उनका कहना मानेंगे। 28 तुम लोग जब
ये सब मुझ से कह ही रहे थे, प्रभु सब कुछ
सुन रहे थे और उन्होंने मुझ से कहा, ‘इन
की बातों को मैंने स्वयं सुन लिया है और वे
ठीक ही कह रहे हैं। 29 कितना अच्छा होगा

[a] 5.10 प्रेम [b] 5.12 पवित्र

यदि इन का रवैया हमेशा ऐसा ही रहे। वह
यह कि वे मुझ से डरते हुए मेरा कहना मानते
रहें'। इस तरह से उनका ही फ़ायदा होगा।
30 इसलिए तुम उनको वापस अपने तम्बुओं
में लौटने के लिए कहो। 31 लेकिन तुम यहीं
मेरे पास ठहरो। मैं तुम्हें वे सभी नियम-आज्ञाएँ
बताऊँगा, जो तुम्हें उनको सिखानी होंगी।
ये सब बातें उन्हें नए देश में माननी होंगी।
32 इसलिए तुम इस बात में सावधानी बरतना
कि प्रभु परमेश्वर के आदेशों का पालन
करो। तुम बाएँ-दाएँ मत मुड़ना। 33 तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें जिस रास्ते पर चलने
को कहा है कि जीवित रहो और तुम्हारा
भला हो। यह भी कि प्रतिज्ञा किए हुए देश
में अधिक दिनों तक रह सको।

6 "जिस देश में बसने के लिए तुम लोग
जा रहे हो, वहाँ तुम्हें कैसे रहना है, क्या
करना है या क्या नहीं, यह सब सिखाने के
लिए प्रभु ने मुझ से कहा है। 2 तुम, तुम्हारे
बेटे और पोते, ये सब प्रभु का आदर सम्मान
करते हुए बतायी सभी नियमों - आज्ञाओं
पर ज़िन्दगी भर चलते रहें। 3 हे इस्राएल,
सुनो तुम्हारे सावधानी से प्रभु की बातों
के पालन से तुम्हारा ही फ़ायदा होगा तुम
अपने पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर के वायदे के
मुताबिक समृद्ध देश में खूब बढ़ जाओगे 4 हे
इस्राएलियो ध्यान लगा कर सुनो, हमारे प्रभु
परमेश्वर एक ही हैं। 5 तुम अपने पूरे मन,
जान और सारी ताकत से अपने प्रभु को प्यार
करना। 6 आज दी हुयी सभी आज्ञाएँ तुम्हारे
मन में सदैव रहें। 7 अपने बाल बच्चों को
इन्हें सिखाना। घर पर, रास्ते चलते, लेटते,
उठते इन के बारे में बातचीत करना। 8 इन्हें
अपने हाथ पर निशान की तरह बाँधना ये
तुम्हारी आँखों के बीच टीके की तरह हों।
9 अपने-अपने घर के चौखट की दोनों और
दरवाज़े पर लिखना 10 'तुम्हारे प्रभु जब तुम्हें
उस देश को पहुँचा दें, जिस के बारे में उन्होंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रण किया
था। जब वह तुम्हें बड़े-बड़े और अच्छे नगर
जिन्हें तुमने बसाया नहीं, 11 वे घर जिन्हें तुमने
अच्छी वस्तुओं से नहीं भरा, जो कुएँ तुमने
नहीं खोदे, जो अंगूर के बगीचे और जैतून के
पेड़ तुमने नहीं लगाए, ये सब जब तुम्हारे पास
हो जाए और तुम सन्तुष्ट हो जाओ। 12 तब
सतर्क रहना, क्योंकि तब संभावना है प्रभु को
भूलने की, जो तुम्हें मिस्र की गुलामी से बाहर
निकाल लाए थे। 13 अपने प्रभु परमेश्वर से
डर कर अपना जीवन बिताना 14 तुम पराए
देवताओं अर्थात् अपने आस-पास के देश
के देवी-देवताओं की उपासना मत करना
15 क्योंकि तुम्हारे प्रभु परमेश्वर जो तुम्हारे
बीच में हैं, वह ईर्ष्या रखते हैं। यदि तुम ध्यान
न दोगे, तो वह आग बबूला हो जाएँगे और
वह तुम्हें बर्बाद कर डालेंगे। 16 'जिस तरह से
तुमने मस्सा में प्रभु परमेश्वर को परखा था,
फिर मत करना 17 उनके आदेशों चेतावनियों
और विधियों को मन लगा कर पूरा करना।
18 जो प्रभु की दृष्टि में सही है, अच्छा है, वही
किया करना। ऐसा करने से तुम्हारी भलाई
ही होगी। तभी तुम उस उत्तम देश को अपने
अधीन कर पाओगे, जिस का वायदा प्रभु ने
किया था। 19 प्रभु के कहने के अनुसार तुम
अपने दुश्मनों को भगा सके थे। 20 भविष्य
में जब तुम्हारा बेटा तुम से पूछे, कि जिन
चेतावनियों, विधियों और नियमों को प्रभु ने
दिया है, उनका मतलब क्या है, 21 तब तुम
बेटे से कहना,' मिस्र में हम गुलाम थे, लेकिन
प्रभु ने अपनी ताकत से हमें निकाला 22 प्रभु ने
मिस्र, फ़िरौन तथा उसके पूरे घराने के विरोध
में बड़े और भयानक चिन्ह और अजीब काम

हमारे देखते किए। 23 जिस भूमि की प्रतिज्ञा
हमारे पूर्वजों से प्रभु ने खाई थी, उसे देने के
लिए वह हमें निकाल लाए। 24 इसलिए प्रभु
ने हमें इन सब बातों को मानने का हुक्म दिया
कि इन के द्वारा हम अपने प्रभु की मानें, जिस
से हमारी भलाई सदैव होती रही और हम
जीवित रहे। 25 यदि हम उनकी आज्ञाओं को
मानने में सावधानी बरतें, तो यह हमारे लिए
फ़ायदेमन्द होगा।’

7 “जब तुम्हारे प्रभु परमेश्वर तुम्हें उस
देश में जिस में तुम बसने वाले हो, तुम्हारे
देखते-देखते हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिब्बी और यबूसी नामक बहुत से
लोगों को जो तुम से अधिक ज़ोरावर थे,
निकाल दें। 2 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर उनको
तुम से हरा दें, तब उन्हें पूरी तरह से खत्म
कर देना। तुम उन लोगों से कोई वाचा मत
बाँधना और न ही उन पर तरस खाना 3 अपने
बेटे-बेटियों के लिए उन से वैवाहिक रिश्ते
मत बनाना 4 वे लोग तुम्हारे बेटों को मेरे रास्ते
से हटा देंगी। वे अन्य देवताओं की पूजा
करवाएँगी। इस वजह से प्रभु का क्रोध तुम
पर भड़क जाएगा और बहुत जल्दी वह तुम्हें
बर्बाद कर डालेंगे। 5 तुम उनकी वेदियों और
लाटों को तबाह कर देना। अशेरा देवता की
मूर्ति को तोड़ डालना। खुदी मूर्तियों को भी न
छोड़ना। 6 तुम लोग अपने प्रभु परमेश्वर के
पवित्र लोग हो। दुनिया के सभी लोगों में से
तुम को उन्होंने अलग किया है। तुम उन्हीं की
दौलत हो । 7 उन्होंने तुम से प्यार किया और
तुम्हें चुन लिया है। तुम्हें इसलिए नहीं चुना
गया कि तुम्हारी संख्या अधिक थी। तुम लोग
गिनती में बहुत नहीं थे, 8 लेकिन प्रभु ने तुम
से स्नेह किया और पूर्वजों से की गयी प्रतिज्ञा
को पूरा किया। इसलिए तुम्हें अपने ताकत
वाले हाथों से निकाल लाए। उन्होंने तुम्हें
गुलामी अर्थात् मिस्र और फ़िरौन के कब्ज़े
से मुक्त किया। 9 इसलिए यह जान लो कि
प्रभु ही है वह प्रभु हैं, जिन पर भरोसा किया
जा सकता है। जो लोग उन से प्रेम रखते हैं
और आज्ञाओं को मानते हैं, उनके साथ वह
अपनी वाचा को पूरा करते है। हज़ार पीढ़ी
तक उनकी कृपा बनी रहती है। 10 लेकिन
जो लोग प्रभु से दुश्मनी रखते हैं, उन्हें वह
सज़ा देकर बर्बाद कर डालेंगे। अपने दुश्मनों
के बारे में वह देर नहीं करते हैं, लेकिन
उनके सामने ही उन्हें बदला दिया जाता है।
11 इसलिए मेरी दी हुयी आज्ञाओं, विधियों
और नियमों के पालन में सावधानी बरतना
12 इन नियमों पर ध्यान देकर पालन करने से
प्रभु परमेश्वर अपनी वाचा और करुणा को
बनाए रखेंगे। इसका वायदा उन्होंने तुम्हारे
पूर्वजों से किया था। 13 वह तुम से प्रेम
रखेंगे, आशीष देंगे और बढ़ाएँगे। प्रतिज्ञा
किए देश में तुम्हारे गर्भ के फल, भूमि के
फल, अनाज, नए दाखरस और तेल पर
आशीष देंगे। वह तुम्हारे मवेशियों और उनके
बच्चों को भी बढ़ाएँगे। 14 सब देशों की तुलना
में तुम आशीषित होगे। इन्सान-जानवर या
नर-मादा सभी में कोई बाँझ न होगा। प्रभु
तुम्हारे बीच में से बीमारी दूर करेंगे। मिस्र की
किसी बीमारी को भी तुम्हारे ऊपर नहीं आने
देंगे। वह इन बीमारियों को तुम्हारे दुश्मनों पर
भेजेंगे। 15 और प्रभु तुम से बीमारियों को दूर
करेंगे; और मिस्र में पाई जानेवाली बुरी-बुरी
बीमारियाँ जो तुम्हें मालूम हैं, बचाकर रखेंगे।
16 और देश-देश के जितने लोगों को तुम्हारे
परमेश्वर तुम्हारे अधिकार में कर देंगे, तुम
उन सभी को मार डालना। उन पर किसी
तरह की दया मत दिखाना और न ही उनके
देवताओं की पूजा करना, नहीं तो तुम फंदे में

फंस जाओगे। 17 यदि तुम अपने मन में सोचने
लगो कि वे लोग जो गिनती में हमसे अधिक
हैं; तो मैं उनको कैसे निकाल सकूँगा?
18 फिर भी उनसे डरना नहीं, जो कुछ तुम्हारे
परमेश्वर ने फिरौन और मिस्र के साथ
किया, उसे अच्छी तरह से याद रखना। 19 जो
बड़े- बड़े काम तुमने अपनी आँखों से देखे
और और जिन चिन्हों और चमत्कारों और
जिस ताकतवर हाथ और बढ़ाई ही भुजा के
द्वारा तुम्हारे परमेश्वर तुमको निकाल लाए,
उनके अनुसार तुम्हारे परमेश्वर उन सभी
लोगों से भी जिन से तुम डरते हो, करेंगे।
20 इससे अधिक तुम्हारे परमेश्वर उनके
बीच बर्रे भी भेजेंगे। यहाँ तक कि उन में से
जो बचकर छिप जाएँगे, वे भी तुम्हारे सामने
से बर्बाद हो जाएँगे। 21 उन से डरना नहीं,
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे बीच में हैं
और वह महान हैं। ज़रूर है कि लोग उनकी
इज्ज़त करें। 22 तुम्हारे परमेश्वर याहवे उन
लोगों को तुम्हारे आगे से निकाल देंगे॥ एक
दम से तुम उन्हें खतम न कर सकोगे, नहीं तो
जंगलि जानवर तुम्हारा नुक्सान कर डालेंगे।
23 तौभी परमेश्वर उनको तुम से हरवा देंगे,
और जब तक परमेश्वर उनको तुमसे हरवा
देंगे और जब तक वे बर्बाद न हो जाएँ तब
तक वे घबराते रहेंगे। 24 और वह उनके
राजाओं को तुम्हारे हाथों में कर देंगे और
तुम उनका नाम इस दुनिया में से मिटा देंगे
। उनमें से कोई तुम्हारे सामने खड़ा न रह
सकेगा और अन्त में तुम उनको बर्बाद कर
डालोगे। 25 उनके देवताओं की मूर्तियों को
आग में जला देना। जिस चाँदी और सोने से
वे मढ़ी हों उसे मत लेना, नहीं तो तुम फँस
जाओगे, क्योंकि ऐसी चीज़ें परमेश्वर की
निगाह में घिनौनी हैं। 26 कोई घिनौनी वस्तु
अपने घर में न लाना, नही तो तुम भी उनकी
तरह नाश होने के सामान की तरह हो जाओगे
। उसे सत्यानाश होने कि वस्तु समझकर उस
से नफ़रत करना। तुम उसे न चाहना , क्योंकि
वह अशुद्ध वस्तु है।

8 “मैं तुम्हें जिन आज्ञाओं के बारे में बताता
हूँ, उन सभों को मानने की कोशिश
करना। यह अच्छे जीवन और उन्नति के लिए
फ़ायदेमन्द होगा। जिस देश के बारे में प्रभु
ने तुम्हारे पूर्वजों से वायदा किया था, उसमें
जाकर तुम रह सकोगे। 2 तुम यह याद रखना
कि प्रभु तुम्हें जंगल के रास्ते से चालीस
सालों में ले आए ताकि तुम दीन बन जाओ।
प्रभु तुम्हें परख रहे थे कि तुम्हारे मन में
क्या है और तुम उनकी आज्ञाओं को मानोगे
या नहीं 3 तुम को उन्होंने नम्र बनाया और
भूख का अनुभव भी दिया। उन्होंने तुम्हारे
बापदादों को मन्ना खिलाया। वह यह सिखाना
चाहते थे कि इन्सान भौतिक खाने ही से
नहीं लेकिन प्रभु के मुँह से निकली बात से
ज़िन्दा रहेगा 4 तुम्हारे कपड़े चालीस वर्षों
तक पुराने नहीं हुए थे और न तुम्हारे पाँव
ही सूजे। 5 यह बात समझ लो कि जैसे एक
पिता अपने बेटे को डाँट-डपट कर सही
दिशा दिखाना चाहता है, वैसे ही तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर करते हैं। 6 इसलिए अपने प्रभु
परमेश्वर की बातों को मानना और उनके
बताए गए रास्ते पर चलना। तुम उन्हीं के
डर में जीना। 7 तुम्हारे प्रभु तुम्हें उस बढ़िया
देश को ले जा रहे हैं जो नदियों, तराईयों,
पहाड़ों से निकलने वाले गहरे सोतों का देश
है। 8 वह देश गेहूँ, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार,
जैतून और शहद से भरपूर देश है। 9 अनाज
उस देश में महँगा नहीं मिलेगा। न ही तुम्हें
किसी चीज की कमी होगी। वहाँ के पत्थर
लोहे के से सख्त हैं। वहाँ के पहाड़ों में

तांबा पाया जाता है। 10 तुम्हें भर पेट खाना
मिलेगा वहाँ तुम सन्तुष्ट होकर, प्रभु के प्रति
धन्यवादी बने रहोगे। 11 तुम बहुत सावधानी
बरतना कि कहीं अपने प्रभु परमेश्वर को
भूलकर आज्ञाओं-नियमों को मानना न छोड़
दो। 12 अच्छे-अच्छे घर बना कर जब तुम
खा-पी कर तृप्त हो जाओ, 13 और जानवरों
की संख्या बढ़ जाने के साथ सोना, चाँदी
और हर तरह की दौलत बढ़ जाए 14 तब
तुम्हारे मन में घमण्ड आ जाने से तुम प्रभु
परमेश्वर को भूलकर मिस्र की गुलामी से
छुड़ाने वाले प्रभु को भूल जाओ। 15 वह
तुम्हें ज़हरीले साँप-बिच्छू वाले जंगल से
और सूखे देश से जहाँ चट्टान में से उन्होंने
पानी निकाला, 16 तुम्हारे पूर्वज जिस मन्ना
को जानते तक नहीं थे, वह खिलाया। वह
तुम्हें दीन बना कर और परख कर तुम्हारा
ही भला करना चाहते थे, 17 कहीं तुम यह न
सोचने लगो कि यह दौलत मेरी ही ताकत
और मेरी ही बुद्धि से मुझे मिली है। 18 अपने
प्रभु परमेश्वर को याद रखना, क्योंकि वही
तुम्हें धन दौलत हासिल करने की शक्ति
इसलिए देते हैं, ताकि जो वाचा उन्होंने तुम्हारे
पूर्वजों से बाँधी थी, उसे पूरा करें। 19 यदि
तुम अपने प्रभु परमेश्वर को भूलकर दूसरे
देवी-देवताओं के पूजा-पाट में लग जाओगे,
तो तुम ज़रूर बर्बाद हो जाओगे। 20 जिन
लोगों को प्रभु तुम्हारे सामने से नाश करने
वाले हैं, उन्हीं की तरह तुम भी अपने प्रभु
की बातों को न मानने के कारण बर्बाद हो
जाओगे।

9 “हे इस्राएल, कान लगाओ, यरदन नदी
तुम इसलिये पार करने जा रहे हो, ताकि
तुम से अधिक ताकत रखने वाले लोग और
जिन के नगरों की ऊँची-ऊँची शहरपनाह है,
उन्हें अपने वश में कर लो। 2 वहाँ ऊँचे कद
वाले अनाकवंशी रहते हैं, जिन का कोई
सामना नहीं कर सकता है। 3 इसलिए आज,
तुम यह समझ लो कि भस्म करते जाने वाली
आग की तरह तुम्हारे प्रभु परमेश्वर, तुम्हारे
साथ नदी पार करेंगे। वहाँ के लोगों को वही
मारेंगे और तब प्रभु की वाणी के अनुसार
उनको उस देश से निकाल कर बहुत जल्दी
बर्बाद कर डालोगे। 4 प्रभु परमेश्वर जब
उन्हें, तुम्हारे देखते-देखते निकाल चुकें, तब
यह मत सोचना प्रभु तुम्हारी किसी अच्छाई
के कारण तुम्हें यह नया देश दे रहे हैं। सच यह
है कि उन लोगों की बुराई के कारण प्रभु उन्हें
तुम्हारे सामने से खदेड़ते हैं। 5 तुम जो उनके
देश को अपने वश में करोगे, तो इसलिए नहीं
तुम बहुत गुणी हो। लेकिन इसका कारण यह
है कि उन लोगों के अपराध बहुत हैं। साथ ही
में इसलिए क्योंकि प्रभु अपनी उस प्रतिज्ञा को
पूरा करना चाहते हैं, जिसे उन्होंने अब्राहम,
इसहाक और याकूब आदि पूर्वजों से किया
था 6 “तुम लोग ज़िद्दी हो। तुम्हारे भले होने
की वजह से तुम्हें यह बढ़िया देश नहीं मिलेगा
7 यह भी याद रखना, कि जंगल में तुम लोगों
ने प्रभु को किस तरह गुस्सा दिलाया था।
मिस्र देश से निकलने के समय से आज तक
तुम प्रभु का विरोध ही करते आए हो। 8 होरेब
के पास तुमने प्रभु को गुस्सा दिलाया था
और वह तुम्हें वहीं खत्म कर देना चाहते
थे 9 वाचा की पत्थर की तख्तियों को लेने
जब मैं पहाड़ पर चढ़ गया था, तब चालीस
रात दिन वहीं रहा था। उन दिनों मैंने न कुछ
खाया और न कुछ पिया। 10 प्रभु ने अपने
हाथ से लिखी पत्थर की दो तख्तियों को मेरे
हाथों में दिया। इन में वह सब कुछ लिखा
था, जो आग के बीच में से सभा वाले दिन
कहा था। 11 चालीस दिन-रात बीत जाने के

बाद प्रभु ने वे तख्तियों मुझे दी थीं। 12 उन्होंने
मुझ से तुरन्त जाने को भी यह कहते हुए
कहा, कि वे लोग सही रास्ते से भटक गए हैं
और अपने लिए ढाल कर मूर्ति बना ली है।
13 फिर प्रभु का कहना यह भी था, मैंने देख
लिया है कि ये लोग ज़िद्दी हैं। 14 इसलिए तुम
मुझे रोको मत! मैं इस दुनिया में से उनका
नामों-निशां मिटा डालूँगा। मैं उन से भी बढ़
कर शक्तिशाली लोग तुम से उत्पन्न करूँगा।
15 इसके तुरन्त बाद मैं उल्टे पैर पहाड़ से
उतरा। उस समय पहाड़ आग से धधक रहा
था। मेरे हाथों में दोनों पत्थर की तख्तियाँ
थीं। 16 तुमने अपने लिए बछड़ा ढाल कर
बनाया था, जो प्रभु की दृष्टि में बड़ा अपराध
था। बहुत जल्दी ही तुम बताए गए सच्चे रास्ते
से हट गए थे। 17 तुम लोगों के देखते-देखते
मैंने गुस्से में आकर दोनों तख्तियों को फेंक
दिया। 18 तब तुम्हारे बड़े गुनाह के कारण मैं
प्रभु के सामने मुँह के बल गिर पड़ा। चालीस
दिन-रात मैं निराहार रहा। 19 प्रभु परमेश्वर
के गुस्से से मैं बहुत डर रहा था। वह तुम से
खुश नहीं थे और तुम को मार डालना चाहते
थे। लेकिन मेरी बिनती सुन ली गयी 20 प्रभु
हारून से भी इतना नाराज़ थे कि उसे मार
डालना चाहते थे। उसी वक्त मैंने हारून के
लिए भी दोहाई दी। 21 जिस बछड़े को बना
कर तुमने गुनाह किया था, उसे मैंने आग में
डाल दिया। उसे पीस कर मैंने धूल के कणों
की तरह कर डाला। उसकी बची राख को
पहाड़ से नीचे बहने वाली नदी में फेंक दिया।
22 तुमने तबेरा, मिस्सा और किब्रात हत्तावा
में भी प्रभु की जलन को उकसाया था। 23 जब
प्रभु ने तुम्हें कादेशबर्ने यह कह कर भेजा था
कि उस देश को अपने वश में कर लो, तब भी
तुमने विश्वास रखने के बदले विद्रोह किया।
24 जिस दिन से मैं तुम को जानता हूँ, मैंने तुम्हें
बलवा करते ही देखा है। 25 इसलिए कि प्रभु
ने यह इरादा कर लिया था कि वह तुम्हारा
नामो-निशां मिटा देंगे, मैं मुँह के बल पड़ा
तुम्हारे लिए गिड़गिड़ाता रहा। 26 मेरी प्रार्थना
यह थी, “हे मालिक प्रभु, यह आपके लोग
हैं, जिन्हें आपने अपनी ताकत से छुड़ाया
था, उन्हें बर्बाद मत कीजिए। 27 अपने सेवक
अब्राहम, इसहाक और याकूब को याद
कीजिए। इन लोगों की कठोरता, दुष्टता और
अपराध पर ध्यान मत दीजिए। 28 कहीं ऐसा
न हो कि जिस देश से आप हम को निकाल
कर लाए हैं, वहाँ के लोग हँस कर कहें, जिस
देश को देने का वायदा प्रभु ने इन लोगों से
किया था, पूरा नहीं कर सका। अवश्य वह
उन से दुश्मनी रखता था इसलिए उन्हें मार
डाला है। 29 ये सभी लोग तो आपकी प्रजा हैं,
और आपके हैं। इन्हें आप बड़े शक्तिशाली
हाथ से निकाल कर लाए हैं।”

10 प्रभु ने मुझ से कहा, “पहली
तख्तियों की तरह दो और तख्तियों
को लो। लकड़ी का एक बक्सा भी
बनवाओ। फिर मेरे पास ऊपर पहाड़ पर
आओ। 2 पहले वाली तख्तियों की तरह मैं
फिर से वचन लिखूँगा। इन्हें तुम बक्से में
रखना 3 बबूल की लकड़ी से सन्दूक बना
कर दो तख्तियों के साथ मैं पहाड़ पर चढ़
गया। 4 प्रभु ने पहले की तरह दस वचन लिख
कर मुझे तख्तियाँ सौंप दीं। 5 पहाड़ से उतरने
के बाद मैंने उन तख्तियों को बक्से में रख
दिया। 6 इसके बाद इस्राएली लोग याकानियों
के कुँओं से निकल कर मोसेरा तक आए
7 वहाँ से वे जो निकले, तो गुदगोदा और
गुदगोदा से योतबाता पहुँचे जहाँ नदियाँ हैं।
8 उस समय प्रभु ने लेवी कबीले को इसलिए
अलग किया, ताकि वे लोग प्रभु की वाचा

के बक्से को उठाने का काम करें। साथ
ही प्रभु की उपस्थिति में सेवकाई करें और
लोगों को आशीर्वाद दें। 9 लेवियों को भूमि
का कोई हिस्सा नहीं मिला था। प्रभु स्वयं
उन लोगों के हिस्सा थे। 10 पहले की तरह
मैं पहाड़ पर चढ़ गया और चालीस रात-दिन
गिड़गिड़ाता रहा। प्रभु ने प्रार्थना सुन कर तुम्हें
नाश करने का इरादा बदल दिया 11 फिर मुझ
से प्रभु बोले, “उठो और इन का मार्गदर्शन
करो। तभी वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपना
अधिकार जमा पाएँगे। 12 अब हे इस्राएलियो,
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर इसके अलावा तुम से
और क्या चाहते हैं कि तुम उन से डरो, उनके
रास्तों पर चलो और प्रेम रखने के साथ पूरे
मन और जान से सेवा करो। 13 तुम को मैं
प्रभु की जो आज्ञाएँ और नियम बताता हूँ,
उसको अपनाओ, इसी में तुम्हारी भलाई है।
14 सब से ऊँचा स्वर्ग और इस पृथ्वी में जो
कुछ भी है, वह सब तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
ही का है। 15 फिर प्रभु ने तुम्हारे पूर्वजों से
गहरा प्यार किया। उन्हें और तुम्हें दुनिया
के तमाम लोगों में से चुन लिया। 16 इसलिए
अपने-अपने मन का बदलाव करो और ज़िद्दी
न रहो। 17 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर, ईश्वरों के
प्रभु और प्रभुओं के प्रभु हैं। वह महान,
पराक्रमी और डर के योग्य है। वहाँ न ही
पक्षपात करते हैं और न घूस लेते हैं। 18 वह
अनाथ और विधवा के साथ इन्साफ़ करते
हैं और परदेशी लोगों को खाना कपड़ा देकर
अपना प्रेम प्रगट करते हैं। 19 इसलिए दूसरे
देश से आए व्यक्ति को अपना प्रेम दिखाओ,
क्योंकि तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे। 20 तुम
अपने प्रभु परमेश्वर से डरना। उन्हीं की सेवा
करते रहना, उन्हीं से लिपटे रहना और उनके
नाम की शपथ न खाना। 21 वह तुम्हारी स्तुति
के लायक हैं और तुम्हारे प्रभु हैं उन्होंने ही ऐसे
बड़े काम किए हैं, जिन्हें तुम सभी ने देखा है।
22 मिस्र में जाने के समय तुम्हारे पूर्वज संख्या
में सत्तर थे। अब तुम्हारे प्रभु ने तुम्हारी संख्या
आकाश के तारों की तरह अनगिनित कर दी
है।

**11** “इसलिए तुम लोग अपने प्रभु
परमेश्वर से ख़ूब मोहब्बत रखना।
जो विधियाँ, नियम और आज्ञाएँ उन्होंने तुम्हें
दी हैं, उन सभी को मानना। 2 तुम लोग यह
जान लो[a]। वे लोग तो सभी बातों से अनजान
हैं कि किस तरह प्रभु ने तुम्हें अनुशासित
किया और अपनी शक्ति से छुड़ा कर अपनी
महिमा की 3 मिस्र में राजा के सामने चिन्ह
दिखाए, अजीब काम किए। 4 तुम्हारा पीछा
करने वाले मिस्र की सेना के घोड़ों और रथों
को सवार सहित पानी में डुबो दिया 5 तुम्हारे
इस जगह तक पहुँचने तक और क्या-क्या
किया? 6 उन्होंने रूबेनी एलीआब के बेटे
दातान और अबीराम के साथ कैसा बर्ताव
किया - उन लोगों के परिवार नौकर-चाकर
आदि इस्राएलियों के देखते-देखते ज़मीन में
समा गए थे। 7 लेकिन तुमने प्रभु के इन
बड़े-बड़े कामों को खुद देखा है। 8 इस कारण
जितनी आज्ञाएँ तुम्हें मैं आज सुना रहा हूँ,
वैसे ही करना। यदि ऐसा करोगे तो ताकतवर
होकर प्रतिज्ञा किए हुए देश को अपने काबू में
कर लोगे। 9 तभी तुम ज़्यादा समय तक वहाँ
रह सकोगे जो बहुतायत का देश है और जिस
का वायदा पहले ही से किया जा चुका है।
10 मिस्र में तुम बीज बोते थे, साग-पात बोते
थे, लेकिन सिंचाई के लिए पाँव से नालियाँ
बनाते थे 11 लेकिन यह नया देश पहाड़ों और
तराईयों का देश है। आकाश की बारिश से

[a] **11.2** तुम्हारे बच्चों से मैं यह नहीं कह रहा हूँ

यहाँ सिंचाई होती है। 12 इस देश पर प्रभु की
निगाह है। साल के आरम्भ से अन्त तक प्रभु
को इसका ख्याल रहता है। 13 यदि तुम मेरी
बातों को ध्यान से सुन कर अपने पूरे मन
और प्राण से प्रभु से प्रेम करो और सेवा करो,
14 तो तुम्हारे देश में शुरुआती और आखिरी
बरसात तुम्हें समय पर मिलने से फ़सल
अच्छी होगी और तुम अनाज/दाखमधु और
तेल इकट्ठा कर पाओगे। 15 मैदान में तुम्हारे
जानवरों के लिए मैं घास दूँगा। तुम स्वयं
भी भोजन से तृप्त हो जाओगे। 16 इसलिए
खुद के बारे में सावधान रहना, कि मन
धोखा न खा जाए और बहक कर तुम दूसरे
देवी-देवताओं की पूजा करने लगो। 17 और
प्रभु परमेश्वर तुम से नाराज होकर आकाश
से वर्षा बन्द कर दें, और ज़मीन से कुछ
न उपजे। इस कारणवश तुम वहाँ भूखे मर
सकते हो, 18 इसलिए अब मेरी ये बातें अपने
मन और प्राण में रखो और चिन्ह के रूप
में अपने हाथों पर बान्धना। ये बातें तुम्हारी
आँखों के बीच में टीके का काम करें। 19 घर
में उठते-बैठते, बाहर चलते फिरते ये बातें
तुम अपने बच्चों को सिखाया करना 20 अपने
घर के दरवाज़े के चौखट और बाएँ-दाएँ,
दोनों ओर इन्हें लिख देना 21 ताकि प्रतिज्ञा
किए हुए देश में तुम और तुम्हारे बच्चों की
उम्र अधिक हो। वे आकाश और पृथ्वी जब
तक हैं, तब तक बने रहें। 22 इसलिए यदि
तुम इन सभी आज्ञाओं के मानने में सावधानी
बरतो, प्रभु का सम्मान करो, उनके बताए
गए रास्तों पर चलने के साथ उन से लिपटे
रहो, 23 तो प्रभु उन देशों के लोगों को तुम्हारे
देखते-देखते निकाल देंगे। तुम अपने से बड़ों
और सामर्थी लोगों के अधिकारी हो जाओगे।
24 जंगल से लबानोन तक जहाँ कहीं तुम्हारे
पाँव पड़ेंगे, वे सभी तुम्हारे हो जाएँगे। जंगल
से लबानोन और परात महानद से लेकर
पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारी सरहद होगी।
25 कोई तुम्हारा मुकाबला नहीं कर पाएगा।
जहाँ-जहाँ तुम्हारे पाँव पड़ेंगे, वहाँ के लोगों
के मन में तुम्हारे कारण डर उत्पन्न हो जाएगा।
26 “सुनो, तुम्हारे सामने आज मैं आशीष और
शाप दोनों ही रख रहा हूँ 27 यदि तुम दी
गयी आज्ञाओं का पालन करोगे तो तुम्हारा
भला होगा, 28 यदि तुम आज्ञाओं को मानने
के बजाए दूसरे देवी-देवताओं का पूजा-पाठ
करोगे तो तुम को सज़ा मिलेगी। 29 जब तुम
प्रतिज्ञा किए हुए देश को प्राप्त कर लो तब
गिरिज़्जीम पहाड़ से आशीर्वाद और दण्ड की
बातें एबाल पहाड़ से सुनाना 30 क्या वे यर्दन
के उस पार पश्चिम में, अराबा के रहने वाले
कनानियों के देश में, गिलगाल के सामने मोरे
के बांज पेड़ों के पास नहीं हैं? 31 तुम यर्दन
नदी के पार इसलिए जाओगे ताकि वायदा
किए हुए देश में जाकर रहो 32 इसलिए सुनाए
गए नियमों-आज्ञाओं को मानने में सावधानी
बरतना।

12 “जिस देश को देने का वचन प्रभु ने
तुम्हें दिया था, उसमें अन्त तक इन
नियमों-आज्ञाओं को मानना। 2 तुम जिन लोगों
के अधिकारी बनोगे उसके लोग ऊँचे-ऊँचे
पहाड़ों, टीलों हरे पेड़ के नीचे, जहाँ-जहाँ
देवी-देवताओं की उपासना करते हैं, तुम
उन्हें तोड़ डालना। 3 वेदियों को गिरा देना,
पवित्र खम्भों को नष्ट कर देना, अशेरा की
मूर्तियों को ऐसा काट फेंकना, कि उस देश
से उनका नामो-निशां मिट जाए। 4 उनके जैसे
काम मत करना 5 सभी गोत्रों में से जिस
जगह को तुम्हारे प्रभु चुने, वहीं जाया करना
6 वहाँ तुम होमबलि, मेलबलि, दशमांश, ली
हुयी भेंटें और मन्नत की चीजों, स्वेच्छाबलि,

गाय-बैलों और भेड़ बकरियों के पहलौठे ले
जाया करना। 7 तुम वहीं खाना-खाना और
अपने-अपने परिवार सहित उन सभी कामों
पर, जिन में तुमने हाथ लगाया हो, और जिन
पर प्रभु परमेश्वर का आशीर्वाद रहा हो, खुश
होना। 8 आज-कल यहाँ जो कुछ जिस को
पसन्द आता है वही करता है, तुम ऐसा न
करना, 9 जो जगह प्रभु परमेश्वर तुम्हें देना
चाहते हैं, तुम अभी तक वहाँ नहीं पहुँचे हो.
10 लेकिन जब तुम वहाँ जाकर बस जाओ
और तुम्हें चारों ओर से शान्ति मिले, 11 और
तुम बिना डर के रहने लगो, तब प्रभु की
आराधना की जगह तुम अपने होमबलि,
मेलबलि, दशमांश, उठायी गयी भेंटें और
मन्नतों की वस्तुएँ वहीं लाया करना 12 अपने
बच्चों और नौकर-चाकर[a] आदि के साथ तुम
वहाँ खुशी मनाना। जो लेवीय तुम्हारे फ़ाटकों
के अन्दर हों वह भी तुम्हारे साथ खुशी
मनाएँ, क्योंकि तुम्हारे साथ उस का कोई
अपना हिस्सा नहीं होगा। 13 तुम सावधान
ज़रूर रहना कि अपनी होमबलियों को कहीं
भी अर्पित न कर दो 14 तुम्हारे जिस गोत्र
में भी जगह निश्चित की जाए, वहीं अपनी
होमबलियों को चढ़ाया करना। जो भी आज्ञा
तुम्हें दी जा रही है, उसे मानना 15 लेकिन
तुम अपने फ़ाटकों के अन्दर अपनी मर्ज़ी
से प्रभु की आशीष के अनुसार पशु मार
कर खा सकोगे। शुद्ध और अशुद्ध दोनों
ही प्रकार के व्यक्ति खा सकेंगे, जैसे कि
चिकारे और हिरन के मांस। 16 लेकिन उस
का खून मत खाना। उसे पानी की तरह
ज़मीन पर उण्डेल देना 17 अपने अनाज, नए
दाखमधु, टटके तेल का दशमांश, गाय-बैलों,
भेड़-बकरियों के पहलौठे, मन्नत की कोई
वस्तु और स्वेच्छाबलि और उठायी हुयी भेंटें
अपने के अन्दर ही खाना 18 प्रभु की चुनी
हुयी जगह ही पर सब के साथ खाते हुए
आनन्द मनाना 19 जब तक तुम जीवित हो,
लेवियों को भूलना नहीं। 20 जब तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर अपने कहने के अनुसार तुम्हारे देश
को बढ़ाएँ और तुम्हारा मन गोश्त खाने का हो
और तुम गोश्त खाने की सोचने लगो, तो जो
चाहे, खा लेना। 21 प्रभु का स्थान यदि तुम्हारे
यहाँ से दूर हों, तो जो तुम्हारे पास जानवर
हों, उसमें से कोई भी मार कर अपने फ़ाटकों
के अन्दर ही खा सकोगे। 22 जिस तरह से
चिकारे और हिरण का मांस खाते हैं, वैसे ही
उस का मांस भी खाया जा सकेगा। व्यक्ति जो
शुद्ध है या अशुद्ध, उसे खा पाएगा। 23 लेकिन
तुम उनका खून मत खाना। खून में जान है
इसलिए मांस के साथ खून कभी भी न खाया
जाए। 24 खून को ज़मीन पर डाल देना। 25 जो
बातें प्रभु की निगाह में सही है, उन्हें करने
से तुम्हारा और तुम्हारे वंश का भला होगा।
26 तुम जब कभी कोई चीज अलग[b] करो
या मन्नत मानों, तो वस्तु को वहीं ले जाओ,
जो प्रभु की चुनी जगह है, 27 वहीं अपने
होमबलियों के मांस, खून दोनों ही को प्रभु
की वेदी पर चढ़ाना। मेल-बलियों का रक्त
उसकी वेदी पर डाल कर उनका मांस खाना।
28 इन बातों को जो तुम्हें सुनायी जा रही हैं,
यदि तुम सुन कर जो प्रभु की दृष्टि में जो
ठीक है, वही करो, तो लाभ तुम्हें तो होएगा
ही, साथ आने वाली पीढ़ी को भी। 29 जब
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर उन देशों के लोगों को
जिन के तुम अधिकारी होने वाले हो, तुम्हारी
आँखों के सामने बर्बाद करें और तुम उनके
अधिकारी बन कर उनके देश में रहने लगो,
30 तुम उस समय सतर्क हो जाना, कि उनके
समाप्त होने के बाद तुम भी उनकी तरह फँस

[a] **12.12** दास-दासी [b] **12.26** पवित्र

जाओ। कहने का मतलब यह है कि उनके
व देवी-देवताओं के बारे में यह जानकारी
हासिल करने का प्रयत्न नहीं करना, कि
उनकी पूजा-पाठ की रीति-विधि क्या है।
31 तुम अपने प्रभु परमेश्वर से ऐसा बर्ताव
मत करना, क्योंकि जितने कामों से उन्हें
नफ़रत है, उन सभी को इन लोगों ने किया
है। इस सीमा तक कि अपने बेटे-बेटियों की
कुर्बानी चढ़ाते हैं। 32 जितनी आज्ञाओं को मैं
दे रहा हूँ उन्हें बहुत बारीकी से मानना। उनमें
से किसी को न बढ़ाना और न किसी में से
कुछ घटाना।

13 “यदि तुम्हारे बीच रहने वाला
कोई व्यक्ति नबी या स्वप्न देखने
वाला कोई चिन्ह या अजीब काम दिखाए
2 और चिन्ह या अजीब काम को सबूत
ठहराकर वह तुम से कहे, आओ हम दूसरे
देवी-देवताओं के मानने वाले बन जाएँ, जिन्हें
हम जानते भी नहीं थे।” 3 तब तुम उस नबी
या स्वप्न देखने वाले की बात पर कान न
लगाना, क्योंकि तुम्हारे प्रभु परमेश्वर तुम्हें
परखेंगे। यह जानने के लिए तुम लोग पूरे
मन और प्राण से उन से प्रेम रखते हो या
नहीं। 4 अपने प्रभु के बताए गए रास्ते पर
चलते जाना, उन से डरना और आज्ञाओं
को मानना। तुम उनकी सेवा[a] करना और
उन्हीं से लिपटे रहना 5 यदि स्वप्न देखने
वाला या भविष्यद्वक्ता तुम को गुलामी से
मुक्त करने वाले प्रभु के विरोध में कर दे, तो
वह मार डाला जाए। इस तरह अपने बीच
में से बुराई दूर करना। 6 यदि तुम्हारा सगा
भाई, बेटा, बेटी तुम्हारी पत्नी या जान से
प्यारा कोई दोस्त यह कह कर फुसलाए, कि
हम दूसरे देवी-देवताओं की पूजा करें 7 ये
देवी-देवता तुम्हारे नज़दीक रहने वालों के
या दूर रहने वालों के हो सकते हैं, 8 लेकिन
तुम उसकी मत सुनना, न ही तरस खाना या
कोमलता दिखाना न ही उसे छुपाना 9 उसे
जान से मार डालना। मार डालने में पहल
तुम करना, बाद में दूसरे हमला बोलें। 10 उस
पर इस तरह से पत्थर फेकें जाएँ कि वह
मर जाए। उसने तुम को तुम्हारे छुड़ाने वाले
प्रभु से तुम्हें दूर करने की कोशिश की है
11 सभी इस्राएली यह देख कर डर जाएँगे
और ऐसा काम तुम्हारे मध्य कोई भी नहीं
करेगा। 12 यदि तुम्हारे किसी नगर के बारे
में यह सुनने को मिले 13 कि तुम्हारे ही कुछ
लोगों ने अपने नगर के लोगों को यह कह कर
बहकाया कि, ‘आओ, हम नए देवी-देवताओं
की पूजा करें’, 14 तो पूछ-ताछ करके पता
लगाना कि यह बात कितनी सच है, क्योंकि
तुम्हारे बीच यह घिनौना काम नहीं, 15 तब
उस नगर के लोगों को ज़रूर मार डालना।
यहाँ तक कि वहाँ के जानवरों को भी खत्म
कर डालना 16 उस नगर के सारे सामान को
चौराहे पर इकट्ठा करके जला डालना। वह
नगर उसके बाद न बसाया जाए। 17 बर्बाद
की हुयी कोई वस्तु तुम न लेना। ऐसा करने
पर प्रभु का गुस्सा शान्त हो जाएगा। प्रभु
अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार तुम पर मेहरबान
होंगे और तुम्हारी संख्या बढ़ाएँगे। 18 यह सब
तभी होगा जब तुम सभी बातों को मानोगे
और प्रभु की आँखों में जो सही है, करोगे।

14 तुम अपने प्रभु परमेश्वर की
औलाद हो। इसलिए मरे हुओं के
लिए न तो अपनी देह को चीरना न भौंहों
के बाल मुढ़ाना 2 प्रभु के लिए तुम एक
पवित्र समाज हो। अपनी खुद की दौलत होने

[a] 13.4 आराधना

के लिए प्रभु ने तुम्हें चुन लिया है। 3 तुम
किसी भी तरह की घिनौनी चीज़ मत खाना
4 जो जानवर तुम खा सकते हो, वे ये हैं
- गाय-बैल, भेड़-बकरी। 5 हिरन, चिकारा,
मृग, बनैली बकरी, सांभर, नील गाय और
बनैली भेड़। 6 फटे खुर वाले और पागुर करने
वाले जानवरों का मांस तुम खा सकते हो।
7 लेकिन पागुर करने वाले और चिरे खुर
वालों में से ऊँट, खरहा और शापान मत
खाना। ये पागुर तो करते हैं, लेकिन इन
के खुर चिरे हुए नहीं हैं। इसलिए तुम्हारे
खाने लायक ये नहीं है। 8 सूअर चिरे खुर
का तो है, लेकिन पागुर नहीं करता इसलिए
तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं है। न ही इन्हें
खाना और न ही इनकी लाश को छूना।
9 पानी के जीव, जिन के छिलके और पंख
है, उन्हें खाया जा सकता है। 10 बिना पंख
और बिना छिलके वाले तुम्हारे खाने लायक
नहीं है। 11 सभी चिड़ियों का मांस खाया
जा सकता है। 12 लेकिन उकाब, हड़फोड़,
कुरर, 13 गरूड़, चील, शाही, 14,15 कौए,
शुतुरमुर्ग, तहमास, जलकुक्कुट और बाज
16,17 छोटा और बड़ा उल्लू, घुग्घुस, धनेश,
गिद्ध, हाड़गील, 18 सारस, बगुले, नौवा और
चमगादड़ 19 जितने रेंगने वाले प्राणी हैं, वे
सभी खाने के हिसाब से अशुद्ध हैं। 20 सभी
शुद्ध पंख वाले पक्षी खाए जा सकते हैं।
21 अपनी मौत से मर जाने वाले पक्षी को
न खाया जाए। तुम्हारे फ़ाटकों के अन्दर
का कोई परदेशी उसे खा सकता है या
पराए व्यक्ति को बेचा जा सकता है। लेकिन
तुम अपने प्रभु के लिए पवित्र समाज हो।
बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में
न पकाना 22 तुम्हारी फ़सल में से बीज का
दसवाँ हिस्सा अलग रखना 23 जिस जगह
को तुम्हारे प्रभु अपनी उपासना के लिए चुनें,
वहीं अपना अनाज, दाखमधु, टटके तेल
का दसवाँ भाग, गाय-बैल. भेड़ बकरियों
के पहलौठों को खाया करना। इस तरह से
तुम प्रभु का डर मानना सीखोगे 24 लेकिन
यदि यह स्थान तुम्हारे लिए बहुत दूर हो, तो
25 उन चीजों को बेच कर, उस पैसे को अपने
साथ वहाँ ले जाना 26 उन पैसों से तुम कुछ
भी खरीद सकते हो। गाय-बैल, भेड़-बकरी,
दाखमधु, मदिरा या जो भी तुम्हारी इच्छा
हो, खरीद लेना। तुम परिवार के साथ प्रभु
परमेश्वर की उपस्थिति में खुश होना 27 तुम
अपने फ़ाटक के अन्दर के लेवीय को मत
छोड़ना, क्योंकि उसके पास जीवन-यापन
का कोई साधन नहीं है। 28 तीन-तीन साल के
गुज़रने पर तीसरे साल की फ़सल का दसवाँ
भाग निकाल कर अपने फ़ाटकों के अन्दर
ही रखना 29 तब लेवी, परदेशी, अनाथ या
विधवाएँ जो तुम्हारे फ़ाटकों के भीतर हों,
वे भी पेट भर कर खाएँ, जिस से तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर तुम्हारे सभी कामों पर अपना
आशीर्वाद बरसाएँ।

15 “हर सात वर्ष के बाद तुम लोगों
को मुक्त किया करना 2 अर्थात् जिस
किसी कर्ज़ देने वाले ने अपने पड़ोसी को
कुछ उधार दिया तो वह उसे छोड़ दे। वह
अपने पड़ोसी या भाई से ज़बरदस्ती भरपायी
न करवाए। इसलिए कि प्रभु परमेश्वर की
ओर से यह तय किया गया है। 3 परदेशी
इन्सान से तुम उसे ज़बरदस्ती ले सकते हो।
लेकिन जो कुछ तुम्हारे भाई के पास तुम्हारा
हो, उसे तुम बिना भरवाए छोड़ देना 4 तुम्हारे
बीच कोई गरीब न होगा। ऐसा इसलिए
क्योंकि तुम पर वहाँ बहुत आशीष होगी।
5 लेकिन यह ज़रूरी होगा कि तुम मन से
उनकी आज्ञाओं को मानो 6 तुम पर इतना

कृपा होगी कि तुम दूसरे देशों को उधार
दोगे। तुम्हें उधार न लेना पड़ेगा। तुम उन पर
हावी होगे, लेकिन वे तुम पर न हो सकेंगे।
7 उस देश में तुम्हारे अहाते के भीतर यदि
कोई गरीब हो, तो उसके लिए अपने मन को
सख्त मत कर लेना। अपनी मुट्ठी को ढीली
रखना 8 जिस वस्तु की उसे ज़रूरत हो या
जितनी उसकी आवश्यकता हो अपना हाथ
ढीला करके उसकी मदद करना 9 सावधान
रहना कि तुम्हारे मन में ऐसी चिन्ता न घर
कर जाए, कि सातवें साल के पास होने के
कारण तुम निर्दयी होकर उसे कुछ न दो। ऐसे
में तुम्हारी इस निर्दयता के कारण यदि वह
मुझे पुकारे, तो यह तुम्हारा अपराध गिना
जाएगा। 10 तुम बिना संकोच उसको देना।
फलस्वरूप तुम्हारे हाथ के हर एक काम में
सफ़लता मिलेगी। 11 गरीब लोग तो सदैव
तुम्हारे देश में होंगे। इसलिए आज्ञा यह है
कि अपना हाथ कड़ा न करते हुए दान ज़रूर
देना 12 यदि तुम्हारा कोई भाई-बन्धु तुम्हारे
हाथ बेचा जाए और वह छैः साल तक सेवा
कर चुके, तो सातवें साल में उसे आज़ाद कर
देना 13 लेकिन उसे खाली हाथ मत भेजना।
14 अपनी भेड़-बकरियों, खलिहान, दाखमधु
के कुण्ड में से ढेर सा देना। जिस तरह से
तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें दिया है, तुम भी देना।
15 यह याद रहे कि मिस्र में तुम भी गुलाम थे
और तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें आज़ाद
किया 16 यदि वह प्रेम के कारण तुम्हारा
घर छोड़कर न जाना चाहे, 17 तो सुतारी
लेकर उस का कान दरवाज़े पर लगा कर
छेद देना, तब वह हमेशा के लिए तुम्हारा
दास रहेगा। दासी के साथ भी ऐसा करना
18 जब उसे आज़ाद करने में तुम्हें मुश्किल
हो, क्योंकि उसने छैः साल तक मजदूरों
की तरह तुम्हारी सेवा की है। तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर तुम्हारे सभी कामों में बढ़त देंगे।
19 तुम्हारी गायों और भेड़-बकरियों के जो
भी पहलौठे नर हो, उन सभी अपने प्रभु के
लिए अलग करना। अपनी गायों के पहलौठों
से मेहनत मत करवाना और न ही अपनी
भेड़-बकरियों के पहलौठे का ऊन कतरना
20 प्रभु के ठहराए स्थान पर अपने परिवार के
साथ आकर हर साल उस का मांस खाना।
21 यदि उसमें किसी तरह का खोट हो : जैसे
कि लंगड़ापन, अन्धापन या कुछ और तो
उसे प्रभु के लिए कुर्बान न करना 22 उसे
अपने फ़ाटकों के अन्दर ही खाना। शुद्ध और
अशुद्ध दोनों तरह के लोग जैसे चिकारे और
हिरन का मांस खाते हैं, वैसे ही उस का भी
खा पाएँगे। 23 लेकिन उस का खून न खाया
जाए। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उण्डेल
देना।”

16 ‘अपने प्रभु परमेश्वर के लिए फ़सह
का त्यौहार अबीब महीने में मनाना।
इसी महीने में तुम्हारे प्रभु तुम को मिस्र की
गुलामी में से निकाल कर लाए थे। 2 इसलिए
प्रभु द्वारा नियुक्त स्थान पर सब तरह की
कुर्बानियाँ करना 3 कोई खमीर वाली वस्तु
उसके साथ मत खाना। सात दिन तक दुख
की रोटी या अखमीरी रोटी खाया करना।
इसलिए कि तुम मिस्र देश से जल्दबाजी में
निकले थे, तुम्हें वह दिन सदैव याद रहना
चाहिए 4 पूरे देश में सात दिन तक खमीर
दिखने भी न पाए तथा पहले दिन की शाम
को तुम जो जानवर कुर्बान करो,उसके गोश्त
में से कुछ भी रात भर बचाकर सुबह तक
न रखना 5 तुम्हारे परमेश्वर जो नगर तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर तुम्हें दें, उसमें फ़सह को अपने
फ़ाटक के अन्दर मत खाना। 6 प्रभु के निवास
स्थान पर हर साल के उसी समय में जब

तुम मिस्र से छूटे थे, फ़सह का पशुबलि
करना। [7]वहीं मांस भूँज कर खाना। सुबह
उठ कर अपने-अपने तम्बू में लौट जाना [8]छैः
दिन अखमीरी रोटी खाते रहना। सातवें दिन
तुम्हारे प्रभु के लिए महासभा रखी जाए। उस
दिन भी मेहनत का काम कोई न करे। [9]खेत
में हँसुआ लगाने के समय से सात हफ्ते गिन
लेना। [10]अपने प्रभु परमेश्वर की भलाईयों
के अनुसार उनके लिए स्वेच्छाबलि देकर
सप्ताहों का त्यौहार मनाना। [11]अपने-अपने
बेटे-बेटियों, दास-दासियों, लेवियों, अनाथों,
विधवाओं और परदेशियों के साथ मिल कर
खुशी मनाना। [12]दिए हुए नियमों-आज्ञाओं
को मानने में सावधानी बरतना। यह भूलना
नहीं कि तुम मिस्र में बन्धुआई में थे [13]‘तुम
अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड में
से सब इकट्ठा करने के बाद सात दिन तक
झोपड़ियों का त्यौहार मनाना [14]सभी लोग
जो तुम्हारे फ़ाटक के भीतर हों इस में आनन्द
मनाएँ। [15]इस त्यौहार को सात दिनों तक
मनाना। प्रभु तुम्हारी बढ़ती में और सभी
कामों में आशीष देंगें। [16]साल में तीन बार
: अखमीरी रोटी, हफ्तों और झोपड़ियों के
त्यौहारों में तुम्हारे सारे पुरुष प्रभु की चुनी
जगह पर इकट्ठे हों। वहाँ कोई भी खाली
हाथ न आए। [17]सभी पुरुष अपनी दौलत
और आशीष के अनुसार प्रभु को दें। [18]तुम
अपने एक-एक गोत्र में से न्यायी और सरदार
नियुक्त कर देना। ये लोग ईमानदारी सच्चाई
से इन्साफ़ करें [19]तुम न ही पक्षपात करना
और न ही न्याय देने में गड़बड़ी करना [20]जो
बिल्कुल ठीक हो, उसी पर अड़े रहना, ताकि
तुम लम्बे समय तक ज़िन्दा रहो। और तुम
प्राप्त हुए देश में अधिक दिन टिक सको ।
[21]तुम अपने परमेश्वर याहवे की जो वेदी
अपने लिए बनाओगे, उसके पास किसी तरह
के पेड़ की अशेरा को मत बनाना। [22]अपने
लिए कोई पवित्र स्तम्भ भी न बनाना जिस से
तुम्हारे प्रभु भी नफ़रत करते हैं ।

**17** “तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए
किसी भी ऐसे पशु को कुर्बान कराने
मत लाना, जिस में किसी तरह की कमी
हो। प्रभु की दृष्टि में ऐसा करना घिनौना
है। [2]यदि तुम्हारे, बीच कोई जन प्रभु की
वाचा तोड़ता है और ऐसा काम करता है, जो
सही नहीं है [3]अर्थात् मेरी आज्ञा के खिलाफ़
देवी-देवता, सूरज-चाँद या किसी तारे की
पूजा की हो या दण्डवत् किया हो [4]और यह
बात तुम्हारे कानों में पड़े, तो इस घिनौने काम
के बारे में जाँच पड़ताल करना, [5]मालूम हो
जाने पर ऐसे व्यक्ति को फ़ाटक के बाहर
ले जाकर पत्थरों से मार डालना [6]जो मौत
की सज़ा के लायक हो, वह केवल एक
गवाही के आधार पर न मारा जाए। दो या
तीन गवाह होने चाहिए। [7]फ़ैसला सुनाने से
पहले साक्षियों के हाथ पहले उठें, बाद में
दूसरे लोगों के। इस प्रकार अपने बीच से
बुराई दूर करना [8]तुम्हारे बीच झगड़ा-फ़साद,
खून, मारपीट, विवाद और दूसरे प्रकार के
मुकदमें जो मुश्किल लगें, तो प्रभु की चुनी
जगह पर आना [9]लेवीय-पुरोहितों[a] के पास
जाकर न्याय सम्बन्धित बातें पूछना [10]उसी
के अनुसार तुम करना और बड़ी सावधानी से
यह सब करना [11]उन बातों से तुम दाएँ-बाएँ
मत मुड़ना [12]जो इन्सान घमण्ड के कारण
वहाँ के याजक या न्यायी की यदि न माने,
उसे मार दिया जाए इस तरह से ऐसी बुराई
अपने यहाँ से दूर रखना [13]यह सब सुन
कर लोग डरेंगे और अहंकार में नहीं करेंगे

[a] 17.9 याजकों

14 प्रतिज्ञा किए देश में पहुँचने पर जब तुम
कहो कि अपने चारों और के देशों की तरह
हम भी एक राजा नियुक्त करेंगे 15 तब प्रभु
द्वारा चुने व्यक्ति ही को राजा बनाना। वह
तुम्हारे ही भाईयों में से कोई हो, न कि
परदेशी। 16 वह ढेर सारे घोड़े न रखे। वह
घोड़े लाने के लिए लोगों को मिस्र भी न भेजे।
तुम्हें वापस मिस्र के रास्ते पर जाना ही नहीं
है। 17 अपने लिए वह तमाम स्त्रियों को भी
न रखे और न ही सोने रूपे की मात्रा बढ़ाए
18 राजगद्दी पर न्याय के लिए बैठते समय वह
लेवीय पुरोहितों[a] की किताब की एक नकल
अपने पास रखे। 19 वह पुस्तक जीवन भर
पढ़ता रहे, ताकि प्रभु का आदर सम्मान करने
और नियमों-आज्ञाओं को मानने में सावधानी
बरते। 20 इस तरह से वह घमण्ड से बचेगा
और अपने भाईयों को तुच्छ नहीं समझेगा।
तभी वह सीधे रास्ते पर चलता रहेगा और
उसके वंश के लोग इस्राएलियों के बीच बहुत
समय तक राज्य कर पाएँगे।

18 लेवीय पुरोहितों का या कहें तो
लेवीय गोत्रियों का इस्राएलियों के
साथ कोई हिस्सा या भाग न हो। उनका
आहार आग में चढ़ाए हुए बलिदान तथा
उसका हिस्सा हो। 2 भाईयों के बीच उनका
कोई हिस्सा न हो। अपने शब्दों के अनुसार
प्रभु स्वयं उनका हिस्सा होंगे 3 चाहे किसी
पशु जैसे गाय-बैल, भेड़-बकरी का मेलबलि
हो, उसके करने वालों की ओर से पुरोहितों
का यह अधिकार होगा कि वे उस का कंधा,
दोनों गाल और पेट प्राप्त करें। 4 अपनी पहली
फ़सल का अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल
और भेड़ों का पहली बार कतरा गया ऊन
भी, 5 क्योंकि तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे
सब गोत्रियों में से उसी को चुना है कि वह
और उसके वंश सर्वदा उनके नाम से सेवा
करने को मौजूद रहें। 6 फिर यदि कोई लेवीय
इस्राएल की बस्तियों में से किसी को, जहाँ
वह परदेशी की तरह रहता हो, अपने मन की
बड़ी इच्छा से उस जगह पर जाए जो नियुक्त
है, 7 तो अपने सभी लेवीय भाईयों की तरह
जो वहाँ अपने प्रभु की उपस्थिति में होंगे,
वह भी सेवकाई करे। 8 और अपने पुरखों
के हिस्से की कीमत को छोड़ उसको भोजन
का हिस्सा भी उनकी तरह मिला करे 9 जब
तुम उस देश में पहुँचते हो तो वहाँ के लोगों
के घिनौने कामों को न सीखना। 10 अपने
बेटों या बेटियों को आग में होम करने वाला,
भविष्य की बातें बतलाने वाला, शुभ-अशुभ
मुहूर्तों का मानने वाला, टोना या तांत्रिक,
11 या बाजीगर या ओझों से पूछने वाला, भूत
साधने वाला या भूतों को जगाने वाला न हो।
12 ऐसे काम करने वाले प्रभु के सामने घिनौने
हैं। इन्हीं गन्दे कामों को करने की वजह से
इन्हें वह निकालने पर हैं 13 तुम प्रभु के सामने
शुद्ध बने रहना। 14 देशों के वे लोग जिन से तुम
मिलने वाले शुभ-अशुभ मुहूर्तों के मानने वाले
और भावी कहने वालों की सुनते हैं। लेकिन
तुम को तुम्हारे प्रभु ने ये काम नहीं करने दिए।
15 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर तुम्हीं में से मेरी तरह
एक भविष्यद्वक्ता को उठाएँगे, तुम लोग उसी
की सुनना 16 यह तुम्हारी उस प्रार्थना के उत्तर
में होगा जो तुमने होरेब पहाड़ के पास सभा
के दिन अपने प्रभु परमेश्वर से की थी, 'मुझे
न तो अपने प्रभु परमेश्वर की आवाज़ फिर
सुनायी दे और न वह भयंकर आग देखने को
मिली, ताकि मर न जाऊँ।' 17 तब प्रभु मुझ
से बोले, "जो वे कह रहे हैं वह बिल्कुल
ठीक है।" 18 इसलिए मैं उनके लिए उन्हीं

[a] 17.18 याजकों

के बीच से तुम्हारी तरह एक भविष्यद्वक्ता
पैदा करूँगा। मैं अपनी बातें उसके मुँह में
डालूँगा। जैसा-जैसा मैं कहूँगा, वैसा ही वह
कह सुनाएगा। 19 उसके कहे गए शब्दों को
जो व्यक्ति स्वीकार न करेगा, उस का हिसाब
उसी से लूँगा। 20 लेकिन जो भविष्यद्वक्ता
घमण्ड में आकर ऐसा कुछ कहे, जो कहने
का आदेश मैंने न दिया हो। या वह दूसरे
देवी-देवताओं के नाम से कुछ कहे, तो उसे
मृत्युदण्ड दिया जाए 21 यदि तुम मन में कहो,
“हम कैसे जानें कि वे वचन प्रभु ने कहे या
नहीं? 22 सबूत यह होगा यदि नबी की कही
हुयी बात पूरी ही नहीं होती है, तो वह प्रभु
की ओर से नहीं थी। उसने घमण्ड में आकर
वह सब बातें कह दी। ऐसे नबी से न डरना।”

19 जब तुम्हारे प्रभु परमेश्वर उन देशों
के लोगों को बर्बाद कर दें, जिन के
देश को वह तुम्हें देंगे और तुम अपने-अपने
घरों में रहने लगो। 2 तब देश के बीच में तीन
नगर अलग करना 3 यह इसलिए कि एक
खूनी भाग कर वहाँ शरण लें 4 यह ऐसा खूनी
होना चाहिए जिस ने दुश्मनी के कारण खून
नहीं किया, लेकिन गलती से हो गया 5 जैसे
कि लकड़ी काटते समय कुल्हाड़ी बेंट से
निकल जाए और जिस पर गिरे वह मर जाए
6 ऐसा न हो कि रास्ता लम्बा होने के कारण
खून का बदला लेने वाला अपने गुस्से में
उस का पीछा करके उसे जा पकड़े और
मार डाले, जब कि वह व्यक्ति प्राणदण्ड
पाने योग्य नहीं है 7 इसलिए यह ज़रूरी है
कि तीन नगर अलग किए जाएँ। 8 तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर उस प्रतिज्ञा के आधार पर जो
उन्होंने पूर्वजों को दी थी कि तुम्हारी सरहद
को बढ़ाकर वह पूरा देश तुम्हें देंगे, 9 यदि
तुम दी गयी आज्ञाओं को मानने में दिलचस्पी
लो और प्रभु से प्रेम रखो, उनके रास्तों पर
चलते रहो - तो इन तीन नगरों के अलावा
तीन नगर और अलग करना, 10 इसलिए
कि किसी निर्दोष इन्सान को न मारा जाए
और तुम दोषी न ठहरो 11 लेकिन यदि कोई
दुश्मनी की वजह से किसी को मार कर शरण
वाले नगर को भाग जाए 12 तो उसे वापस
लाकर खून का बदला लेने वाले के सुपुर्द
करे कि वह मौत की सज़ा पाए 13 उस पर
तरस खाने की आवश्यकता नहीं। तुम निर्दोष
के खून को दोष इस्राएल से दूर करना, जिस
से तुम्हारा भला हो। 14 अपने इस नए देश में
प्राचीनों द्वारा तय की हुयी सीमा में बदलाव
मत लाना 15 किसी भी व्यक्ति के गुनाह के
बारे में एक जन की गवाही काफ़ी नहीं है।
दो या तीन गवाह ज़रूर हों। 16 यदि कोई
झूठी गवाही देने वाला किसी के खिलाफ़
प्रभु को छोड़ देने की गवाही देने के लिए
आया हो 17 तो वे दोनों व्यक्ति जिन के बीच
मुकदमा हो, प्रभु के सामने, अर्थात् उन दिनों
के पुरोहितों और जजों के सामने खड़े किए
जाएँ 18 तब जज अच्छी तरह से पूछ-ताछ
करे और यदि फ़ैसला यह हो कि वह झूठा
गवाह है और भाई के विरोध में झूठी गवाही
दी है 19 तो अपने भाई का जिस तरह का
नुकसान करवाने की योजना उसने की हो,
ठीक वैसा ही तुम भी करना। इस तरह से
अपने बीच में से इस तरह की बुराई को दूर
करना। 20 दूसरे लोग यह सुन कर सावधान
हो जाएँगे। भविष्य में वे ऐसा काम करने
से रूकेंगे। 21 ऐसी स्थिति में तरस न खाया
जाए। प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले
आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ
और पाँव के बदले पाँव।

20 अपने दुश्मनों से लड़ाई के समय
उनके घोड़े, रथ और बड़ी सेना देख
कर घबरा मत जाना। मिस्र की गुलामी से
छुड़ाने वाले तुम्हारे प्रभु तुम्हारे साथ हैं। 2 युद्ध
के लिए दुश्मन के पास जाते समय पुरोहित[a]
फ़ौज के पास आकर कहे, 3 “हे इस्राएलियों
आज तुम युद्ध के लिए जा रहे हो, लेकिन
घबराना नहीं 4 शत्रुओं से लड़ने और तुम्हें
बचाने के लिए वह तुम्हारे साथ-साथ रहते
हैं।” 5 सरदार लोग सिपाहियों से कहें, कि
जिस व्यक्ति ने नया घर बनाने के बाद समर्पण
न किया हो, वह वापस लौट जाए। ऐसा
इसलिए कि युद्ध में मौत हो जाने पर दूसरा
इन्सान उस का समर्पण न करे। 6 ऐसा कौन
होगा जो अंगूर का बगीचा लगाए लेकिन
फल न खाए। वह भी घर चला जाए, ताकि
उसके मरने पर दूसरा मनुष्य अंगूर न खाए
7 जिस व्यक्ति की शादी की बात ही लगी हो
और शादी न हुयी हो, वह भी घर चला जाए।
नहीं तो उसके युद्ध में मारे जाने पर दूसरा
इन्सान उस से विवाह कर लेगा। 8 सरदार
सिपाहियों से यह भी कहे कि डरपोक लोग
अपने-अपने घर लौट जाएँ, ताकि दूसरे लोग
उन्हें देख कर अपनी हिम्मत न छोड़ दें।
9 यह सब कह चुकने के बाद सेनापतियों
को नियुक्त किया जाए 10 जब कभी किसी
नगर के खिलाफ़ लड़ाई के लिए तैयारी
करो, पहले उन्हें मेल-मिलाप का संदेश देना
11 यदि वह मान ले और अपने दरवाज़े खोल
दे, तब जितने उसमें हो वे सभी तुम्हारे वश
में हो जाएँ और सेवा करें। 12 लेकिन यदि वे
सन्धि के लिए तैयार न हों, और तुम से लड़ना
मांगें, तो उस नगर को घेर लेना। 13 जब
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर उसे तुम्हारे सुपुर्द कर
दें, तब उस में के सभी पुरुषों को तलवार
से मार डालना 14 महिलाओं, बच्चों, जानवरों
और दूसरी वस्तुओं को अपने लिए रख
लेना 15 दूर के नगरों से और उन जातियों
के नगरों से ऐसा व्यवहार करना जो यहाँ
की नहीं है। 16 लेकिन जो नगर इन लोगों के
हैं, जिन्हें प्रभु तुम्हारे अधीन करने वाले हैं,
वहाँ के किसी भी जीव को ज़िन्दा न छोड़ना
17 हित्तियों, एमोरियों, कनानियों, परिज्जियों,
हिब्बयों और यबूसियों को बर्बाद कर
डालना 18 ताकि तुम उन लोगों की तरह
देवताओं की सेवा जैसे घिनौने कामों को
करो और प्रभु परमेश्वर के खिलाफ़ गुनाह
करो 19 जब युद्ध की मनसा से तुम किसी नगर
को जीतने के लिए बहुत समय तक घेरे रहो,
तब पेड़ों को नुकसान न पहुँचाना। उनके फल
से तुम फ़ायदा उठा सकोगे। क्या पेड़ भी
इन्सान हैं कि तुम उन्हें घेरो? 20 लेकिन जिन
पेड़ों के बारे में तुम यह जानो कि इन के फल
खाने लायक नहीं हैं, तो उन्हें काट डालना।
उस नगर को तब तक घेरे रहना जब तक उस
पर अधिकार न कर लो।

21 तुम्हारे प्रतिज्ञा किए हुए देश में यदि
कभी मारे गए इन्सान की देह मैदान
में पड़ी मिले और उसके मारने वाले का
सुराग न मिल सके, 2 तो तुम्हारे बुज़ुर्ग और
जज उस जगह जाकर उन नगरों की दूरी नाप
लें, जो मारे गए इन्सान के चारों ओर है।
3 तब जो नगर मारे गए व्यक्ति के पास हों,
उस नगर के प्राचीन अपने गाय-बैलों में से
एक बछिया लें। इस बछिया से किसी तरह
का काम न लिया गया हो और न वह जूए में
जोती गई हो। 4 उस नगर के बुज़ुर्ग लोग उसे
एक बहते पानी की ऐसी घाटी में ले जाएँ,
जिसे कभी जोता-बोया गया न हो। वहाँ पर

[a] 20.2 याजक

वे उस बछिया की गर्दन को तोड़ डालें। 5 तब
लेवी-पुरोहित पास में आएँ क्योंकि उनको
तुम्हारे प्रभु परमेश्‍वर ने अपनी सेवा करने
और आशीर्वाद देने के लिए अलग किया है।
हर तरह के झगड़े और मारपीट की वारदातों
में भी वे न्याय दें। 6 उस मारे गए व्यक्ति के
पास नगर के सभी बुज़ुर्ग उस बछिया के
ऊपर जिस की गर्दन उस घाटी में तोड़ दी गई
है अपने हाथों को धोएँ। 7 वे यह भी कहें,
“न तो हमारे हाथों ने खून बहाया है और
न ही हम ने अपनी आँखों से देखा है। 8 हे
प्रभु, अपने लोगों को जिन्हें आपने छुड़ाया
है, माफ़ करें। इस निर्दोष के खून बहाए जाने
का गुनाह अपनी प्रजा पर न लगाएँ। तब खून
का दोष हट जाएगा। 9 इसलिए तुम वह काम
करके जो प्रभु की आँखों में ठीक है अपने
बीच में से बेगुनाह के खून का आरोप दूर
करना 10 जब तुम अपने दुश्मनों के विरोध
में लड़ाई के लिए जाओ, तो तुम्हारे प्रभु उन्हें
तुम्हारे वश में कर दें। तुम उन्हें गुलाम बना
कर ले जाओ। 11 तब यदि गुलाम बनाए लोगों
के बीच कोई सुन्दर महिला दिखे और तुम
उसे चाहने लगो और अपनी पत्नी बनाना
चाहो, 12 तो उसे अपने कर ले आना। वहाँ पर
वह अपना सिर मुड़ाए और नाखून कटाए।
13 फिर वह अपनी बँधुवाई के कपड़े भी
उतार दे और तुम्हारे घर ही में रहे। वह पूरे
एक महिने तक अपने माता-पिता के लिए
शोक मनाए। इसके बाद ही तुम उसके पति
बन सकते हो और वह तुम्हारी पत्नी हो
जाएगी। 14 यदि वह तुम्हें अच्छी न लगे, तो
वह जहाँ जाना चाहे, उसे जाने देना। पैसे
से न उसे बेचना और न बुरा बर्ताव करना,
क्योंकि तुमने उसके शील को बिगाड़ दिया है
15 किसी व्यक्ति की दो पत्नियाँ हों और एक
उसे अच्छी लगती हो और दूसरी भाती न
हो। दोनों के बेटे पैदा होने पर यदि बड़ा बेटा
अप्रिय पत्नी से हो, 16 तो दौलत के बँटवारे
के समय वह अपनी प्रिय पत्नी से उत्पन्न बेटे
को अप्रिय पत्नी से उत्पन्न बेटे की जगह में
पहलौठा नहीं ठहरा सकता 17 लेकिन वह
अपनी अप्रिय पत्नी से उत्पन्न बेटे को अपनी
सारी दौलत का दोगुना भाग देकर उसके
पहलौठेपन की सच्चाई को स्वीकार करे। वह
तो उसके पुरुषत्व का पहला प्रमाण[a] है और
पहलौठे का अधिकार उसी का है। 18 यदि
किसी का बेटा ज़िद्दी और बलवई है, जो
अपने माता-पिता का कहना न मानता हो और
डाँट-फटकार के बावजूद भी आज्ञाकारी न
बनें, 19 तो उसके माता-पिता उसको पकड़
कर नगर प्राचीनों के पास ले जाएँ। 20 वे वहाँ
के नगर प्राचीनों को बताएँ कि उनका वह
बेटा ज़िद्दी और बलवई है। यह हमारी सुनता
नहीं है और पेटू तथा पियक्कड़ है। 21 तब
उस नगर के सब लोग पत्थरवाह करके उसे
मार डालें। इस प्रकार तुम अपने यहाँ से इस
बुराई को दूर रखना। यह सुन कर लोग भी
डरेंगे। 22 “यदि किसी व्यक्ति ने मौत की सज़ा
लायक गुनाह किया हो, तो उसे मार कर
पेड़ पर लटका देना।” 23 उसकी लाश रात
भर पेड़ पर लटकी न रहे। उसी दिन उसे
दफ़ना देना। इस तरह से प्रतिज्ञा किए देश
को अशुद्धता से बचाना। याद रखना पेड़ पर
लटकाया व्यक्ति प्रभु से सज़ा पाया हुआ है।

**22** “किसी के भटके हुए गाय-बैल या
भेड़-बकरी को नज़र-अन्दाज़ करने
के बजाए, उसके मालिक के यहाँ पहुँचा
देना। 2 लेकिन यदि तुम्हारा वह भाई पास में
न रहता हो, या तुम उसे जानते न हो तो उसे

[a] **21.17** फल

अपने यहाँ रख लेना। उस व्यक्ति के अपने
जानवर को ढूँढते रहने तक वह तुम्हारे पास
ही रहे 3 उसके जानवर या कपड़े किसी भी
वस्तु के साथ भी ऐसा ही करना। 4 ‘रास्ते में
अपने भाई के किसी पशु को पड़ा हुआ देख
कर आगे मत बढ़ जाना। उसे उठाने में उसकी
मदद ज़रूर करना। 5 कोई महिला आदमियों
के कपड़े न पहने और न ही कोई आदमी
महिला का पहिरावा पहने। प्रभु की दृष्टि में
ऐसा करने वाले घृणित हैं। 6 “रास्ते में पेड़
या ज़मीन पर तुम्हें किसी चिड़िया का घोंसला
दिखाई दे सकता है। उसमें बच्चे होंगे या अण्डे
या उनकी माँ अण्डों पर बैठी होगी। तुम बच्चों
सहित उनकी माँ को मत लेना। 7 तुम उन बच्चों
को ले सकते हो, लेकिन माँ को जाने देना,
ताकि तुम्हारा भला होने के साथ, तुम्हारी उम्र
अधिक हो। 8 अपना नया घर बनाने पर छत
की मुण्डेर ज़रूर बनाना, ताकि वहाँ से किसी
के गिर कर मर जाने पर तुम खून के अपराधी
न ठहरो।’ 9 “अपने अंगूर के बगीचे में दो
तरह के बीज मत बोना। तब उसकी उपज
और बीज अपवित्र न ठहरेंगे। 10 हल जोतते
समय बैल और गदहा एक साथ इस्तेमाल
न करना 11 ऊन और सनी से मिले कपड़े न
पहनना 12 ओढ़ने की चादर के चारों ओर की
कोर पर झालर लगाना 13 एक पुरुष के किसी
महिला से विवाह के बाद उसे अच्छी न लगने
पर 14 यदि वह उसकी बुराई करने के साथ
ही बुराई का आरोप लगाए,‘ मैंने इस महिला
में कुँवारी के चिन्ह नहीं पाए हैं।’ 15 तो उस
महिला के माता-पिता नगर के फ़ाटक पर
बुज़ुर्ग लोगों के पास कुँवारेपन के सबूत के
साथ जाएँ। 16 उस महिला का पिता, बुज़ुर्ग
लोगों से कहे, ‘मैंने अपनी बेटी का विवाह
इस आदमी के साथ कराया था, लेकिन इस
आदमी को यह अच्छी नहीं लगती है 17 मेरी
बेटी पर कुकर्म का आरोप भी वह लगा रहा
है, लेकिन मेरी बेटी के कुँवारेपन के चिन्ह ये
रहे।’ 18 उसी समय उसके माता-पिता बुज़ुर्ग
लोगों के सामने चादर फैलाएँ। 19 तब वहाँ
के पुरनिए उस आदमी को डाँट लगा कर
सौ शेकेल चाँदी का दण्ड देते हुए महिला
के पिता को दें। ऐसा इसलिए क्योंकि उस
व्यक्ति ने एक इस्राएली महिला की बदनामी
की है। वह महिला उसकी पत्नी जीवन भर
रहे। वह व्यक्ति उसे कभी तलाक न दे सके।
20 लेकिन यदि उस महिला में कुँवारीपन के
चिन्ह नहीं पाए गए, तो उसे उसके पिता के
घर के दरवाज़े पर लाकर पत्थरवाह किया
जाए। 21 ऐसा इस कारणवश क्योंकि उसने
अपने पिता के घर में वेश्या का काम किया।
इस तरह से तुम अपने बीच से ऐसी बुराई को
दूर रखना। 22 यदि कोई पुरुष किसी दूसरे
पुरुष से विवाहित महिला के साथ सोता
हुआ पकड़ा जाए, तो दोनों ही व्यक्ति जान से
मार डाले जाएँ।” 23 किसी कुँवारी कन्या के
विवाह की बात लगी हो, लेकिन कोई दूसरा
पुरुष उसके साथ बलात्कार करे. 24 तो उन
दोनों को फ़ाटक के बाहर ले जाकर पत्थरों से
मार डाला जाए। यह सज़ा कन्या को इसलिए
कि उसने शोर मचा कर दूसरों को सतर्क नहीं
किया और पुरुष को इसलिए कि उसके एक
कन्या की लाज न रखी। 25 यदि एक कन्या
से जिस के विवाह की बात लग चुकी हो,
कोई पुरुष ज़बरदस्ती यौन सम्बन्ध करे, तो
ऐसे पुरुष को जान से मार डाला जाए 26 उस
कन्या को सज़ा न दी जाए, क्योंकि पुरुष ने
ज़ोर-ज़बरदस्ती से[a] ऐसा किया, 27 कि मैदान
में मैं अकेले होने पर उसे कोई बचाने भी
नहीं आ सका 28 यदि कोई पुरुष किसी ऐसी

[a] **22.26** जैसे कोई किसी पर हमला करता है

कन्या को पकड़ कर कुकर्म करे, जिस की
शादी की बात न लगी हो और वे पकड़े
जाएँ, 29 तो वह बुरा काम करने वाला व्यक्ति
कन्या के पिता को पचास शेकेल चाँदी दे।
इसलिए कि उसने उसकी इज़्ज़त को लूटा,
इसलिए वह उसे कभी तलाक न दे और उसे
अपनी पत्नी बना कर रखे। 30 कोई व्यक्ति
अपनी सौतेली माँ को अपनी पत्नी न बनाए।
यह तो अपने पिता के ओढ़ने को हटाने की
तरह है।”

23 “जिस इन्सान के अण्डे कुचले गए
हों या लिंग काट डाला गया हो, वह
प्रभु की सभा में न आए। 2 कुकर्म से जन्मा
हुआ व्यक्ति भी प्रभु की सभा में न आए। यहाँ
तक कि उसकी दस पीढ़ी तक उसके वंश का
कोई व्यक्ति प्रभु की सभा में प्रवेश न करे।”
3 प्रभु की सभा में कोई अम्मोनी या मोआबी
को आने की इजाज़त नहीं है। यह बात
उनकी दसवीं पीढ़ी तक मानी जाए। 4 ऐसा
इसलिए क्योंकि जब तुम मिस्र की गुलामी में
से निकले थे, तब अनाज-पानी के साथ उन
लोगों ने तुम से मुलाकात नहीं की थी। इतना
ही नहीं उन लोगों ने अरम्नहरैम देश के पतोर
नगर वाले बोर के बेटे बिलाम को तुम्हें शाप
देने के लिए दक्षिणा दी। 5 लेकिन तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर ने बिलाम की बात न सुनी। तुम्हारे
प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे लिए उसके द्वारा
दिए गए शाप को आशीर्वाद में बदल डाला,
क्योंकि वह तुम से प्रेम करते थे 6 अपने
जीवन काल में तुम उनके कल्याण और भले
की कामना मत करना। 7 एदोमी लोगों से
नफ़रत मत करना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई
हैं। मिस्रियों लोगों से भी नफ़रत न करना,
क्योंकि तुम उनके देश में परदेशी थे। 8 उनके
यहाँ जिन परपोतों का जन्म हो, वे प्रभु की
सभा में आ सकते हैं। 9 अपने विरोधियों[a] से
लड़ने के लिए जब कभी तुम छावनी डालो,
तो बुरी बातों से बचना 10 यदि रात में किसी
आदमी का वीर्य बह गया हो, तो वह छावनी
के बाहर ही रहे और अन्दर न आये। 11 शाम
होने से पहले वह नहाए और सूरज डूबने के
बाद छावनी में आए 12 तुम्हारे शौचालय की
एक जगह रहे, उसी का इस्तेमाल लोग करें।
13 अपने पास एक खनती भी रखा करना।
सण्डास करने के बाद मिट्टी खोद कर मल
को ढाँक ज़रूर दिया करना। 14 तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर तुम्हें बचाने और तुम्हारे दुश्मनों
को तुम से हरा देने के लिए तुम्हारे बीच
में होंगे। इसलिए तुम्हारी छावनी शुद्ध होनी
चाहिए, ताकि कोई अशुद्ध चीज देख कर वह
तुम से अप्रसन्न न हो जाएँ। 15 जो गुलाम अपने
मालिक के पास से भाग कर तुम्हारी शरण में
आए, उसको उसके मालिक के सुपुर्द मत
करना। 16 जो नगर उसे पसन्द आए, उसमें
उसे रहने देना। उस पर अन्धेर भी मत करना
17 इस्राएली महिलाएँ देवदासी का सा काम
न करें। इस्राएली पुरुष भी इस तरह का काम
न करें। 18 अपनी किसी मन्नत को पूरा करने
के लिए वेश्यापन या पुरुषगमन से कमाए हुए
धन का इस्तेमाल मत करना। ऐसा इसलिए है
क्योंकि दोनों जगह की कमाई प्रभु परमेश्वर
की निगाह में घिनौनी हैं। 19 दौलत, खाने की
वस्तु या कुछ और क्यों न हो, ब्याज पर कर्ज़
की तरह अपने भाई को न देना। 20 परदेशी
को ब्याज पर कर्ज़ दे सकते हो, लेकिन
अपने किसी भाई के साथ ऐसा व्यवहार न
करना। यदि तुम इस बात को मानोगे, तो तुम
प्रतिज्ञा किए हुए देश में जो काम भी करोगे,
प्रभु का आशीष उस पर रहेगी। 21 अपने प्रभु

[a] **23.9** दुश्मनों

परमेश्वर के लिए जब तुम[a] कोई मन्नत मानो,
तो उसे पूरा करने में देर न करना, क्योंकि
तुम्हारे प्रभु उसे तुम से ले लेंगे और तुम
गुनाहगार ठहरोगे 22 लेकिन यदि तुम मन्नत
न मानो, तो यह कोई गुनाह नहीं है। 23 अपने
मुँह से निकली हुयी बात को पूरा करने में
सावधानी बरतना। अपनी इच्छा से अपने
प्रभु परमेश्वर के लिए जैसी मन्नत मानो, पूरी
आज़ादी से उसे पूरा करना 24 किसी के अंगूर
के बगीचे में जाने पर जी भर कर अंगूर खाना,
लेकिन अपने बर्तन में कुछ भी मत रखना।
25 तुम किसी के खेत में खड़ी फ़सल के समय
बालें तोड़ सकते हो, लेकिन किसी के खड़े
खेत में हँसुआ न लगाना।”

24 “किसी महिला से विवाह के बाद
यदि किसी पुरुष को उसमें कोई
शर्मनाक बात के कारण वह अच्छी नहीं
लगती है तो वह त्याग पत्र देकर अपने घर
से उसे निकाल दे 2 यदि वह महिला जाने
के बाद दूसरे पुरुष की पत्नी बन जाती है
3 और यह दूसरा पति भी उस से नफ़रत करने
लगता है। इसके बाद वह तलाकनामा देकर
घर से बाहर भेज देता है। या फिर यह पति का
देहान्त हो जाता है, 4 तो महिला का पहला
पति जिस ने उसे तलाक देकर निकाल दिया
था, वापस फिर से उसे अपनी पत्नी नहीं बना
सकता, क्योंकि उस महिला से सम्भोग किया
जा चुका है। प्रभु की दृष्टि में यह घिनौनी बात
होगी। जिस नए देश में तुम दाखिल होने वाले
हो, वहाँ ऐसा न होने देना। 5 विवाह के तुरन्त
बाद पुरुष फ़ौज में युद्ध के लिए न जाए और
उसे कोई जिमेंदारी भी न सौंपी जाए। वह
साल भर अपने घर में छुट्टी मनाए और पत्नी
को खुश रखे। 6 चक्की या उसके ऊपरी पाट
को गिरवीं न रखा जाए, क्योंकि यह तो प्राण
को गिरवीं रखना है। 7 यदि कोई इस्राएली
किसी का अपहरण करते हुए पकड़ा जाए
और उसके साथ कठोर बर्ताव कर या बेच
दे, तो ऐसे व्यक्ति को जान से मार दिया जाए।
8 कुष्ट रोग से सतर्क रहना, लेवीय पुरोहित जो
कुछ तुम्हें सिखाए, वैसा ही करते रहो। मैंने
उसे जो सलाह दी है उसी के अनुसार करना।
9 मिस्र से निकलते समय प्रभु परमेश्वर ने
रास्ते में मरियम के साथ कैसा व्यवहार
किया था, यह याद रखना 10 अपने पड़ोसी
को किसी भी तरह का कर्ज़ देने पर बन्धक
लेने के लिए उसके घर के अन्दर मत जाना।
11 कर्ज़ लेने वाला स्वयं बाहर बन्धक की
चीज लाए। 12 यदि वह मनुष्य गरीब हो तो
उस का बन्धक अपने पास रख कर सो मत
जाना। 13 सूरज डूबते ही उस का बन्धक उसे
वापिस कर देना, ताकि वह रात में ओढ़
कर सो सके और तुम्हें आशीर्वाद दे। प्रभु
परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा रवैया कीमती
और उचित है। 14 किसी गरीब इन्सान को
पीड़ा मत देना। वह तुम्हारे जात भाईयों में
से या तुम्हारे देश के फ़ाटकों के अन्दर रहने
वाले परदेशियों में से हो।” 15 सूरज डूबने से
पहले उसकी मज़दूरी दे देना, क्योंकि वह
गरीब है। उस का सारा मन उसी पर लगा
रहता है। यदि वह प्रभु को पुकारेगा तो यह
तुम्हारा अपराध ठहरेगा 16 न बेटे के कारण
पिता और न पिता के कारण बेटे की जान
ली जाए। हर एक अपने गुनाह के लिए सज़ा
पाए। 17 किसी परदेशी या अनाथ के साथ
अन्याय मत करना। न ही किसी विधवा के
कपड़े गिरवीं रखना। 18 लेकिन याद रखना
कि तुम मिस्र में गुलाम थे। तुम्हारे प्रभु ने
तुम्हें वहाँ से छुड़ाया। इसलिए मैं तुम्हें ऐसा

[a] 23.21 यदि तुम

करने का आदेश दे रहा हूँ। 19 “जब तुम अपने
खेत की फ़सल काटो और कोई पूला भूल
जाओ. तो वापस लेने के लिए मत जाना। वह
कोई परदेशी, अनाथ या विधवा के इस्तेमाल
के लिए हो। इस से तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
तुम्हारी मेहनत पर आशीर्वाद देंगे। 20 जैतून
के पेड़ के फलों को झाड़ते समय दूसरी बार
मत झाड़ना। वह किसी परदेशी, अनाथ या
विधवा को मिले। 21 जब तुम अंगूर के बगीचे
से अंगूर तोड़ो, तो एक ही बार तोड़ना, दूसरी
बार नहीं। वह परदेशी, अनाथ और विधवा
के लिए हो। 22 यह तुम्हें याद रहे कि तुम मिस्र
में गुलाम थे, इसलिए मैं तुम्हें यह हुक्म दे रहा
हूँ।”

**25** आपसी झगड़ों के निबटाए जाने के
लिए अदालत में जाओ। जज की
यह जिमेंदारी है कि वही बेगुनाह का बचाव
करे और गुनाहगार को सज़ा दिलवाए। 2 यदि
अपराधी को कोड़े लगाए जाने की सज़ा
दी गयी है, तो जज उसे लिटाकर उसके
गुनाह के अनुसार गिन कर अपने सामने कोड़े
लगवाए। 3 उसे चालीस कोड़े से अधिक
नहीं लगाए जा सकते है। चालीस से अधिक
होने पर तुम्हारा भाई तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ
ठहराया जाएगा 4 जिस बैल से काम लिया
जाए उसे भूखा न रखा जाए। 5 साथ में रहने
वाले भाईयों में से यदि एक बिना औलाद
मर जाए, तो मरे हुए की पत्नी का विवाह
परिवार से बाहर किसी आदमी से हो। उसके
पति का भाई उस विधवा को अपनी पत्नी
बना ले। वही पति के भाई की ज़िम्मेंदारी
पूरी करे। 6 उस महिला का पहलौठा बेटा मरे
भाई के नाम का कहलाए जिस से उस भाई
का नाम इस्राएल में से समाप्त न हो जाए।
7 यदि वह आदमी अपने भाई की पत्नी को
अपनाना न चाहे, तो उसके भाई की पत्नी
फ़ाटक पर बुज़ुर्गों के पास जाए और कहे मेरे
पति का भाई इस्राएल में अपने भाई का नाम
बनाए रखने के लिए तैयार नहीं है। वह पति
के भाई की ज़िम्मेंदारी पूरी करने से इन्कार
कर रहा है। 8 तब नगर के प्राचीन या बुज़ुर्ग
उसे बुलाएँ और उस से बातचीत करें। यदि
वह अड़ जाए कि अपने भाई की विधवा
को अपनी पत्नी नहीं बनाएगा, 9 तो उसके
भाई की पत्नी प्राचीनों के सामने उसके पास
जाकर उसके पैरों से जूती उतारें और उसके
मुँह पर थूक दें। फिर महिला कहें, जो आदमी
अपने भाई के वंश को जारी न रखना चाहे,
उसके पास ऐसा ही किया जाता है। 10 तब
इस्राएल में उस आदमी का यह नाम पड़
जाएगा : ‘जूती उतारे हुए पुरुष का घराना’
11 दो पुरुषों[a] में हाथा-पाई हो सकती है। ऐसे
समय में एक की पत्नी बीच-बचाव करते
समय मारने वालों के गुप्तांग को पकड़ ले.
12 तो तुम उसके हाथ काट डालना। उस पर
दया बिल्कुल न दिखाना। 13 “एक ही वज़न
के छोटे बड़े बाँट, तुम अपनी थैली में मत
रखना। 14 अपने घर में भी एक ही नाप के
छोटे बड़े नपुए मत रखना 15 तुम्हारे बाँट और
नपुए दोनों, पूरे-पूरे और सही हों ताकि जो देश
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर तुम्हें देने जा रहे हैं, वहाँ
लम्बे समय तक रहने पाओ। 16 क्योंकि जो
व्यक्ति इस तरह के कामों को करता है, वह
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर के सामने घिनौना है।
17 याद रखना कि जब तुम मिस्र में से निकल
कर आ रहे थे, तो अमालेकियों ने तुम्हारे
साथ कैसा बर्ताव किया, 18 रास्ते में उन्होंने
तुम्हारा सामना किया। जब तुम थके-मांदे थे,
तो जो लोग पीछे आ रहे थे, उन पर उसने

[a] **25.11** जाति-भाई

हमला किया। प्रभु का डर उनके मन में नहीं
था। 19 इसलिए जब तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
तुम्हारे चारों ओर के दुश्मनों से उस देश में
जो वह तुम्हें देने वाले हैं, तुम्हें आराम दे, तब
तुम इस दुनिया में से अमालेकियों का नामो
निशां मिटा डालना। यह बात कभी भूलना
नहीं।

26 “प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुँचकर
जब तुम वहाँ रहने लगो, 2 तो वहाँ
की ज़मीन की हर तरह की पहली उपज
थोड़ी-थोड़ी लेकर टोकरी में रखना। उसे
उस जगह ले जाना, जिसे प्रभु परमेश्वर
अपना नाम बनाए रखने के लिए चुनेंगे। 3 तब
याजक[a] के पास जाकर कहना, ‘आज मैं
अपने प्रभु के सामने यह ऐलान करता हूँ कि
जिस देश को देने का वायदा प्रभु ने किया
था, उस में हम दाखिल हो चुके हैं।’ 4 फिर
पुरोहित टोकरी को तुम्हारे हाथ से लेकर
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की वेदी के सामने रख
दे। 5 इसके बाद तुम अपने प्रभु परमेश्वर
के सामने यह कहना, ‘मेरा पिता जगह-जगह
जाने वाला अरामी था। वह अपने छोटे से
परिवार के साथ वहाँ जाकर रहा। वहीं उसके
द्वारा एक बड़ी शक्तिशाली और संख्या में
अधिक जाति उत्पन्न हुयी, 6 तब मिस्रियों ने
हमारे साथ बुरा बर्ताव किया, दुख दिया और
कठोर सेवा करवायी। 7 तब अपने पूर्वजों के
प्रभु के सामने हम गिड़गिड़ाए। प्रभु ने हमारी
सुन ली। उन्होंने हमारी परेशानी, मेहनत और
होने वाले अत्याचार को भी देखा। 8 फिर प्रभु
अपने ताकतवर हाथ के द्वारा हैरत में डाल
देने वाले तथा अजीब कामों के साथ हमें
मिस्र देश से निकाल लाए। 9 उन्होंने हमें यहाँ
पहुँचा कर यह देश दिया है, जो बहुत सम्पन्न
है। 10 हे प्रभु, ‘देखिए, जो ज़मीन आपने मुझे
दी है, उसकी पहली फ़सल मैं लाया हूँ।’ फिर
इसे तुम अपने प्रभु परमेश्वर के सामने रखना
तथा अपने प्रभु परमेश्वर का भजन-कीर्तन
करना 11 तब जितनी अच्छी चीजें तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर ने तुम को और तुम्हारे परिवार को
दी हैं, उन सभी के लिए तुम लेवीय और अपने
बीच रहने वाले परदेशी के साथ मिल कर
खुश होना 12 तीसरे साल अर्थात् दशमांश देने
के साल में अपनी सब प्रकार की बढ़त का
दसवाँ भाग निकाल देने के बाद उस लेवीय,
परदेशी, अनाथ व विधवा को देना, ताकि
वे खा कर सन्तुष्ट हों। 13 तब तुम अपने प्रभु
परमेश्वर से कहना, जो आज्ञा आपने मुझे
दी है, उन सभी को ध्यान में रखते हुए मैंने
किया है। मैंने लेवीय, परदेशी, अनाथ तथा
विधवा को दिया है। मैंने न ही किसी आज्ञा
को टाला है, न ही भुलाया है। 14 उस हिस्से
में से मैंने न अपने दुख के समय कुछ खाया
है, न कोई चीज मैंने अशुद्धता की हाल में
निकाली है। मैंने किसी मरे हुए के लिए भी
कुछ नहीं दिया। अपने प्रभु परमेश्वर की
मैंने सुनी है। आपकी दी गयी सभी आज्ञाओं
को मैंने माना है 15 अपने पवित्रस्थान स्वर्ग
में से हम पर दृष्टि करें अपने इस्राएल को
आशीष दें। हमारे पूर्वजों से किए गए वायदे
के अनुसार हमें इस सम्पन्न देश में आशीष
दीजिए। 16 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर आज इन
विधियाँ-नियमों के पालन करने का हुक्म देते
हैं। इसलिए अपने पूरे तन-मन से इन को
करने में सावधानी बरतना।” 17 आज तुमने
यह ऐलान किया है कि तुम उनके रास्तों
पर चलोगे। यह भी कि तुम उनको विधियों,
आज्ञाओं और नियमों को सुन कर मानोगे।
18 अपने वायदे के अनुसार आज तुम्हें अपनी

[a] **26.3** पुरोहित

‘प्रजा’ और ‘कीमती दौलत’ कहा है और यह
भी कि तुम उनकी सभी आज्ञाओं को माना
करो। 19 यह भी कि जितने राष्ट्र[a] उन्होंने
बनाए हैं, उन सभी में वह तुम्हें सब से ज़्यादा
बड़ाई, शौहरत और इज़्ज़त देंगे। साथ ही यह
भी कि उनके कहने के अनुसार अपने प्रभु
परमेश्वर के लिए पवित्र लोग ठहरो।”

**27** तब मूसा और इस्राएल के बुज़ुर्गों
ने लोगों को आज्ञा दी, “आज मेरी
दी गयी सभी बातों का पालन किया जाए।
2 यर्दन नदी को पार करके जिस दिन तुम
उस देश में पाँव रखो, जिसे तुम्हारे प्रभु
परमेश्वर तुम्हें दे रहे हैं, उसी दिन तुम
अपने लिए बड़े-बड़े पत्थर खड़े करके चूने
से पोतना 3 पार कर लेने के बाद दी गई
आज्ञाओं-नियमों को उन पत्थरों पर लिखना।
ऐसा करने से तुम बुज़ुर्गों के प्रभु परमेश्वर
को प्रतिज्ञा किए हुए समृद्ध देश में दाखिल हो
सकोगे। 4 यर्दन नदी पार कर चुकने के बाद
मेरी आज्ञा के मुताबिक पत्थरों को एबाल
पहाड़ पर खड़ा करना और चूने से पोत
डालना 5 वहीं तुम अपने प्रभु परमेश्वर के
लिए पत्थरों से एक वेदी तैयार करना। यह
ध्यान रहे कि उस पर लोहे का कोई औज़ार
न चले 6 अन-गढ़े पत्थरों से इस वेदी को
बनाना। इसके बाद प्रभु परमेश्वर के लिए
होमबलि चढ़ाना 7 वहीं मेलबलि चढ़ाना और
प्रभु की उपस्थिति में खुश होना। 8 चूने से
पुते पत्थरों पर आज्ञाओं-नियमों को अच्छी
तरह लिख डालना।” 9 इसके बाद मूसा तथा
लेवीय-पुरोहितों ने पूरे इस्राएल से कहा, “हे
इस्राएल, शान्त होकर सुनो, तुम आज प्रभु
के लोग बन चुके हो, 10 इसलिए तुम अपने
प्रभु की सुन कर उनकी आज्ञाओं-नियमों
को मानना।” 11 उसी दिन मूसा ने आज्ञा
दी, 12 “यर्दन नदी पार कर चुकने के बाद
शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ़
और बिन्यामीन, गिरिज़्जीम पहाड़ पर लोगों
को आशीर्वाद देने के लिए खड़े हो जाएँ।
13 आज्ञा न मानने को बताने के लिए एबाल
पहाड़ पर रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान
और नप्ताली खड़े हों। 14 इसके बाद लेवी
ऊँची आवाज़ में इस्राएलियों से कहें, 15 “उसे
सज़ा मिले, जो मूर्तिकार के हाथों से गढ़ी या
ढली मूर्ति बनवा कर किसी छिपी जगह में
रखे। यह प्रभु के लिए घिनौनी बात है। तब
सभी लोग जवाब में कहें, ऐसा ही हो।” 16 जो
अपने पिता या माता की बेइज़्ज़ती करे, वह
दण्ड पाए 17 वह इन्सान सज़ा के लायक है,
जो अपने पड़ोसी की सरहद के निशान को
हटाए। 18 उस इन्सान को दण्ड दिया जाए,
जो अन्धे भटका देता है। 19 वह भी सज़ा
के लायक है, जो परदेशी, विधवा या अनाथ
को न्याय नही मिलने देता। 20 जो अपने पिता
की पत्नी के साथ सोता है, उसे सज़ा मिले
। 21 जो पशु गमन करे वह दण्ड के लायक
ठहरे । 22 जो अपनी बहन के साथ कुकर्म
करे वह भी शापित है। 23 जो अपनी सास
केसाथ व्यभिचार करे उसे भी सज़ा मिले।
24 जो अपने पड़ोसी को छिप कर मारे, उसे
सज़ा मिले। 25 जो निर्दोष की जा लेने के लिए
घूस ले वह शापित हो। 26 जो व्यक्ति इस
दिए गए नियम-आज्ञाओं की अनदेखी करे
वह शापित हो। इन सभी वचनों को सुनने
के बाद सभी कहें आमीन ।”

**28** यदि तुम बड़ी लगन से अपने प्रभु
परमेश्वर की कही हुयी बातों को
सुनने के बाद वैसा ही करो, तो दुनिया के सारे

[a] 26.19 लोग, जाति

देशों से अधिक प्रभु तुम्हारी उन्नति करेंगे।
2 अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञा मानने से
तुम इन भलाईयों को चख सकोगे। 3 गाँव
हो या नगर, दोनों जगह पर तुम्हारा भला
होगा। 4 तुम्हारे बाल-बच्चे, ज़मीन की फ़सल,
जानवरों के बच्चे, मवेशियों की संख्या तथा
रेवड़ के मेंमने 5 तुम्हारी टोकरी और कठौती
आशीषित हो 6 अन्दर आते और बाहर जाते
समय तुम्हारा कल्याण हो 7 तुम पर हमला
करने वाले दुश्मनों को प्रभु तुम्हारे सामने
ही हरा देंगे। वे लोग एक रास्ते से आएँगे,
लेकिन सात रास्तों से भाग निकलेंगे।”
8 तुम्हारे कामों पर और भण्डार[a] पर प्रभु का
आशीर्वाद होगा। तुम्हें मिलने वाले देश पर
प्रभु परमेश्वर की आशीष रहेगी। 9 अपने
प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने और
उन्हीं के रास्तों पर चलने से प्रभु के वायदे
के अनुसार वह तुम लोगों को मज़बूत पवित्र
लोग करके बनाएँगे। 10 इसलिए दुनिया के
सभी लोग जान लेंगे कि प्रभु हैं और उन
से डरेंगे भी। 11 तुम्हें जो देश देने के लिए
प्रभु ने पूर्वजों से वायदा किया था, उस
देश में प्रभु तुम्हारे बाल-बच्चों, जानवरों के
बच्चों तथा भूमि की फ़सल में बढ़ाएँगे।
12 समय पर बरसात तथा मेहनत के कामों
पर आशीर्वाद देने के लिए वह हाथ बढ़ाएँगे।
तुम दूसरों को कर्ज़ दोगे, दूसरों से लोगे
नहीं। 13 तुम्हें प्रभु पूँछ नहीं, सिर बनाएँगे। तुम
बहुत इज़्ज़त पाओगे। लेकिन यह सब तभी
होगा, जब तुम प्रभु का आज्ञाओं का पालन
करोगे। 14 जिन बातों की आज्ञा आज तुम्हें
दी जा रही है, उन में से किसी का हल्का
समझ कर देवी-देवताओं का भजन-कीर्तन
मत करने लगना 15 यदि तुम अनसुनी करके
इन नियमों-आज्ञाओं को टाल दो, तो तुम्हें
सज़ा मिलेगी 16 तुम चाहे नगर हो या गाँव में,
सज़ा के लायक ठहरोगे। 17 तुम्हारी टोकरी
और कठौती, दोनों ही शापित होंगे 18 तुम्हारी
औलाद, मूर्ति की उपज, पशुओं की बढ़त
तथा रेवड़ के बच्चे 19 अन्दर आते समय
और बाहर जाते समय तुम शापित ही होगे।
20 बुरे कामों में लग जाने और मुझ प्रभु को
छोड़ देने का परिणाम यह होगा कि तुम
जिस काम में हाथ डालोगे, प्रभु का शाप,
फटकार और घबराहट तब तक रहेगी, जब
तक तुम बर्बाद न हो जाओ। 21 तुम पर
आपत्ति[b] तब तक रहेगी, जब तक तुम प्रतिज्ञा
किए हुए देश हासिल करने से पहले मिट
न जाओ। 22 बुखार, तपेदिक, जलन, तेज
ताप, झुलस और गेरूई तब तक तुम्हारे पीछे
पड़े रहेंगे, जब तक तुम्हारा नामों-निशां न
रहे 23 तुम्हारे सिर के ऊपर आकाश कांसे
की तरह और पाँव के नीचे की ज़मीन लोहा
बन जाएगी। 24 तुम्हारे देश में बरसात की
जगह पर रेत और धूल बरसेगी। ऐसा तब
तक होता रहेगा, जब तक तुम पूरी तरह
से धूल में न मिल जाओ 25 तुम्हारे दुश्मनों
से प्रभु तुम्हें हरा देंगे। एक दिशा से तुम
उन पर हमला करोगे, लेकिन सात रास्तों
से होकर तुम भाग खड़े होगे। दुनिया के
सभी लोगों के लिए तुम पूरी बर्बादी का एक
नमूना बन जाओगे। 26 तुम लोगों की लाशें
पक्षियों और जानवरों के लिए भोजन वस्तु
बन जाएँगी। उन प्राणियों को भगाने वाला
कोई न होगा। 27 प्रभु तुम्हें मिस्र के से फोड़ों,
बवासीर, दाद और खुजली से इतना कष्ट
देंगे, कि तुम ठीक नहीं हो पाओगे। 28 तुम
पागलपन, अन्धेपन और मन की घबराहट से
परेशान रहोगे। 29 जिस तरह अन्धा अन्धेरे में
उसी तरह तुम दिन-दुपहरी में टटोलते रहोगे।

[a] 28.8 खत्तों [b] 28.21 मरी

तुम अपने कामों में कामयाब न होगे। तुम
हमेशा सताए जाओगे और लूटे जाओगे। तुम्हें
कोई छुड़ा न सकेगा। 30 तुम किसी लड़की
से सगाई करोगे, लेकिन कोई दूसरा उसे
भ्रष्ट कर डालेगा। तुम घर तो बना सकोगे,
लेकिन उसमें रह नहीं पाओगे। तुम अंगूर का
बगीचा तो लगाओगे, लेकिन अंगूर चख भी
न सकोगे 31 तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारा पशु
मारा जाएगा, लेकिन उसमें से तुम्हें खाने को
कुछ न मिलेगा। लोग तुम्हारा गदहा छीन
लेंगे और लौटाएँगे नहीं। तुम्हारी भेड़े तुम्हारे
दुश्मनों को दे दी जाएँगी। तुम उनके लिए
तरसते रहोगे, लेकिन बेबस रहोगे। 32 तुम्हारे
बेटे- बेटियाँ दूसरे देश के लोगों को दे दी
जाएँगीऔर तुम्हारा छुड़ाने वाला कोई न
होगा। 33 तुम्हारी मेहनत का फल और ज़मीन
की उपज दूसरे देशों के लोग खा लेंगे। तुम
अन्धेर सहते रहोगे और पिसते जाओगे।
34 जो कुछ तुम देखोगे, उस से पागल हो
जाओगे। 35 तुम्हारे सिर से पैर-यहाँ तक कि
घुटने और टाँगें ऐसे फोड़ों से भर जाएँगे,
कि कभी तुम ठीक ही नहीं हो पाओगे।
36 तुम्हारा राजा ही तुम्हें ऐसे लोगों के बीच
ले जाएगा, जिसे न तुम और न ही तुम्हारे
पूर्वज जानते थे। तुम लड़की और पत्थर से
बनाई गयी मूरतों के सामने झुकोगे। 37 जिन
लोगों के बीच तुम खदेड़ दिए जाओगे उन्हीं
लोगों में तुम भयंकर बर्बादी, कहावत और
शर्म के कारण बन जाओगे। 38 खेत में तुम
बीज तो ढेर सा बोओगे, लेकिन फ़सल कम
ही काटोगे। तुम्हारी फ़सल टिड्डियाँ चट कर
जाएँगी। 39 तुम अंगूर के बगीचे बड़ी मेहनत
से लगाओगे, लेकिन तुम अंगूर का रस न
पी सकोगे। उन्हें कीड़े खा जाएँगे। 40 जैतून
के पेड़ तुम्हारे यहाँ होंगे, लेकिन उसके
तेल का लाभ तुम न उठा पाओगे, क्योंकि
उसके फल पेड़ से झड़ जाएँगे। 41 तुम्हारे
यहाँ पैदा हुए बेटे-बेटियाँ, गुलामी में चले
जाएँगे। 42 तुम्हारे यहाँ के पेड़ों और भूमि की
उपज को टिड्डियाँ चट कर जाएँगी। 43 तुम्हारे
यहाँ रहने वाले परदेशी समृद्ध होते जाएँगे,
लेकिन तुम गरीब होते जाओगे 44 तुम उन से
कर्ज़ लोगे, वे लोग तुम से कर्ज़ नहीं मांगेंगे।
वह सिर और तुम पूँछ ठहरोगे। 45 ये सारी
मुसीबतें तुम्हारे ऊपर आ पड़ेंगी, जब तक
तुम बर्बाद न हो जाओ। ऐसा इसलिये होगा
क्योंकि तुम अपनी मनमानी करने से न रुके।
46 वे लोग तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के
लिये निशान और आश्चर्य की बात होंगे।
47 सभी कुछ बड़ी तादाद में होने के बावजूद
तुमने अपने प्रभु परमेश्वर की सेवा खुशी
से और मन से नहीं की। 48 इसलिये जिन
दुश्मनों को प्रभु तुम्हारे खिलाफ़ भेजेंगे, तुम
उनकी भूख,प्यास, नंगेपन और सब चीज़ों
की कमी में सेवा करोगे। वह तुम्हारे ऊपर
तब तक बोझ डालेंगे, जब तक तुम्हें बर्बाद
न कर डालें। 49 जैसे उकाब तेज़ी से नीचे
आता है,वैसे ही प्रभु तुम्हारे खिलाफ़ ऐसे
लोगों को ले आएँगे, जिन की भाषा भी तुम
लोग समझते नहीं होगे। 50 ऐसे लोग जिन्हें
देखने ही से डर लगता है। वे लोग न ही
बूढों की कदर करते हैं और न ही बच्चों
पर रहम खाते हैं। 51 वे तुम्हारे मवेशियों
के बच्चों और खेती की उपज को तब तक
खाएँगे,जब तक तुम्हें बर्बाद न कर डालें। वे
लोग तम्हारे लिये अनाज,अंगूर का रस या
तेल न छोड़ेंगे।तुम्हारे जानवरों के बच्चे भी वे
न छोड़ेंगे। 52 ये लोग तुम्हें तम्हारे फ़ाटकों के
अन्दर तब तक घेरे रहेंगे, जब तक तुम्हारे
देश में ऊँची और मज़बूत शहरपनाह जिस
पर तुम भरोसा रखते हो,ढह न जाये। प्रभु
ने जो देश तुम्हें दिया है उसके फ़ाटकों के

अन्दर तुम्हें घेर लिया जाएगा। 53 जब तुम्हारा
दुश्मन घेराबन्दी और परेशानी के ज़रिये तुम्हें
पीड़ा देगा। तब तुम अपने बेटे- बेटियों का
मांस खाओगे। 54 तब तुम्हारे बीच जो कोमल
और सुकुमार होगा,वह भी अपने भाई, पत्नी
और अपने दूसरे बच्चों को गुस्से से देखेगा।
55 यहाँ तक कि उनमें से किसी को अपने
बच्चों के मांस के एक टुकड़े का हिस्सा
नहीं देगा। जिस घेरेबन्दी और तकलीफ़ से
तुम्हारा दुश्मन तुम्हारे विरोध में आएगा, वह
बहुत होगा। 56 तुम्हारे यहाँ जो कोमल महिला
होगी, वह भी अपने प्रिय पति, बेटे-बेटी को,
57 अपनी जांघों के बीच में से निकली खेड़ी
तथा अपने उत्पन्न होने वाले बच्चे नही देना
मांगेगी, क्योंकि जिस घेरेबन्दी और मुसीबत
से तुम्हारा दुश्मन तुम्हारे सभी, फाटकों के
अन्दर तुम्हें सताएगा, उस दौरान वह उनको
छिपकर खाएगी, क्योंकि उसके पास कुछ
और न होगा। 58 यदि तुम प्रभु का कहना न
मानो, 59 तो प्रभु तुम्हें और तुम्हारी औलाद
को मरी, बीमारी और न ठीक होने वाली
बीमारियों से परेशान कर डालेंगे। 60 मिस्र की
जिन बीमारियों से तुम डरते हो, वे तुम पर
आएँगी। 61 जिन बीमारियों के बारे में लिखा
भी नहीं है, वे भी तम्हारे बर्बाद होने तक
तुम्हारे पीछे लगी रहेंगी। 62 अभी आकाश के
तारों की तरह तुम लोग बेशुमार हो। लेकिन
उस समय प्रभु के खिलाफ़ जाने की वजह से
तुम लोग थोड़े से रह जाओगे। 63 जिस तरह
से प्रभु परमेश्वर तुम्हारी बढ़त और भलाई
से खुश होते थे, वैसे ही तुम्हारी बर्बादी से
खुश होंगे। जिस देश में तुम बसने वाले हो,
तुम उस में से उखाड़ फेंके जाओगे। 64 तुम
लोग दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने
तक बिखरा दिये जाओगे।वहाँ तुम लकड़ी
और पत्थर के देवताओं की पूजा करोगे।
इन देवताओं को न ही तुम जानते थे, न
तुम्हारे पूर्वज। 65 उन लोगों के बीच तुम्हें कोई
आराम न मिलेगा। वहाँ प्रभु तुम्हें काँपता मन,
धुँधली आँखें और घबराहट देंगे। 66 तुम्हारी
ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा। तुम डर
से जकड़े रहोगे। तुम्हारे जीवन में से भरोसा
जाता रहेगा। 67 जो डर तम्हारे मन में घर कर
चुका है,और जो कुछ भी तुम देख सकते हो,
उसके कारण तुम कहोगे,‘शाम कब होगी’
और शाम को कहोगे, ‘सुबह कब होगी।’
68 प्रभु तुम्हें जहाज़ों पर चढ़ाकर उस रास्ते
से मिस्र में वापस लौटा लाएँगे, जिसे फिर
कभी देख न पाओगे। वहाँ तुम अपने- अपने
दुश्मनों के सामने गुलाम होने के लिये बिकने
को खड़े हो जाओगे,लेकिन तुम्हें कोई न
खरीदेगा।

**29** होरेब पहाड़ पर प्रभु परमेश्वर ने
एक वाचा इस्राएलियों से बाँधी थी।
दूसरी वाचा की बातें ये हैं, जिन्हें प्रभु ने
मूसा को आदेश दिया था, कि मोआब देश में
बाँधे। 2 सभी इस्राएलियों को मूसा ने अपने
पास बुलाकर कहा, “जो कुछ प्रभु ने मिस्र
देश में फ़िरौन, उसके सभी कार्यकर्ताओं और
पूरे देश के साथ किया था, तुमने अपनी
आँखों से देखा। 3 तुमने बड़ी परीक्षाओं, बड़े
निशान तथा अजीब कामों को भी देखा था
4 ऐसा लगता है कि प्रभु ने तुम्हें न तो समझने
का मन, न देखने वाली आँखें और न ही कान
दिए हैं। 5 चालीस साल तक मैं तुम्हें जंगल
में लेकर घूमा। उस समय तुम्हारे पहनने के
कपड़े फटे नहीं, न ही जूतियाँ घिसीं। 6 तुम
जो खाना नहीं खा सके और जो दाखमधु
तथा मदिरा न पी सके, वह सब इसलिए
हुआ ताकि तुम यह जान लो कि मैं ही
तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ। 7 तुम लोग जब

इस जगह पर आए थे, तब हेशबोन का
राजा, सीहोन एवं बाशान का राजा आगे
हम से लड़ने आ गए थे। लेकिन हम लोगों
ने उन सभी को हरा दिया था 8 उनके देश
को लेकर रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के
आधे गोत्र को उन सब की मीरास होने के
लिए दे दिया। 9 इसलिए इन बातों को मानने
में सावधानी बरतना, जिस से तुम अपने
कामों में कामयाबी हासिल करो। 10 “आज
तुम्हारे प्रभु के सामने तुम्हारे प्रधान, गोत्र,
तुम्हारे बुज़ुर्ग तथा तुम्हारे अधिकारी, यहाँ
तक कि सारे इस्राएली पुरुष, 11 तुम्हारे बच्चे,
पत्नियाँ, तुम्हारे सिवाने के भीतर रहने वाले
परदेशी, तुम्हारे लकड़हारे और पनहारे तक
सभी इसलिए खड़े हो जाएँ, 12 कि अपने
प्रभु परमेश्वर के साथ उस वाचा में तथा
उसकी उस शपथ में सहभागी हो सको, जो
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर आज तुम्हारे साथ बना
रहे हैं; 13 जिस से कि अपने उन शब्दों के
अनुसार जो उन्होंने तुम से कहे और अपने
उस वायदे के अनुसार जो उन्होंने तुम्हारे
पूर्वजों - अब्राहम, इसहाक तथा याकूब से
किया था, वह तुम्हें आज अपने लोग ठहराएँ
और वह तुम्हारे प्रभु ठहरें। 14 मैं जो वाचा
तुम से आज बाँध रहा हूँ और प्रतिज्ञा कर
रहा हूँ, वह केवल तुम लोगों से ही सम्बन्ध
नहीं रखती है, 15 लेकिन उनके साथ भी
जो यहाँ हैं या नहीं हैं। 16 तुम्हें मालूम है
कि मिस्र में हमारी स्थिति क्या थी, तथा
जिन-जिन देशों से होकर तुम्हें आना था,
उन में से पार होकर हम किस तरह आ
गए। 17 तुमने उनकी घिनौनी चीजों-लकड़ी,
पत्थर, चाँदी और सोने की मूर्तियों को भी
देखा था। 18 तुम में से किसी आदमी या
औरत, परिवार या गोत्र का मन हमारे प्रभु
परमेश्वर से मुकर न जाए। परिणामस्वरूप
वह दूसरे देशों के देवताओं की पूजा करे।
ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच कोई ऐसी जड़ हो
जो जहरीला फल तथा नागदौना पैदा करे।
19 ऐसा इन्सान जब शाप की इन बातों को
सुनेगा, तो यह सोच कर अपने को आशीषित
समझेगा, कि हालांकि मैं अपने ज़िद्दी के
अनुसार जीवन जीऊँ, शान्ति कायम रहेगी।
ऐसे विचार से दोनों तरह की ज़मीन सींची
हुयी और बिना सींची हुयी ज़मीन बर्बाद हो
जाएगी। 20 प्रभु ऐसे इन्सान को कभी-भी माफ़
नहीं करेंगे। प्रभु परमेश्वर का गुस्सा ऐसे
मनुष्य पर आएगा और लिखी हुयी सज़ा उस
पर आएगी। उस का नाम प्रभु आकाश के
नीचे से मिटा देंगे। 21 वाचा के सभी शापों के
अनुसार, मुसीबतों के लिए इस्राएल के सभी
गोत्रों में से अलग करेंगे। 22 इसकी वजह से
आने वाले पीढ़ी तथा दूर देश से आने वाला
परदेशी तुम्हारी मुसीबतों और बीमारियों को
देख कर कहेंगे, 23 कि इस देश की पूरी ज़मीन
गन्धक और नमक हो गई है। इसके बंजर हो
जाने से यहाँ कुछ भी बोना बेकार है। यह भूमि
सदोम-अमोरा और तथा अदमा-सबोयीम की
तरह हो गयी है जिसे प्रभु ने अपने गुस्से में
आकर बर्बाद कर डाला था। 24 तब सभी देश
कहेंगे, ‘इस राष्ट्र के साथ प्रभु ने ऐसा क्यों
किया? यह गुस्सा क्यों?’ 25 तब सभी लोग
उत्तर देंगे, ‘इन सभी घटनाओं का कारण यह
था कि मिस्र की गुलामी से उन्हें निकालते
समय उनके पूर्वजों के प्रभु परमेश्वर ने जिस
वाचा को उनके साथ बाँधा था, उन लोगों
ने उसे तोड़ दिया 26 उन लोगों ने दूसरों के
देवताओं की सेवा और पूजा की, हाँ, ऐसे
देवताओं की, जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे
और प्रभु की और से उनकी पूजा की मनाही
थी। 27 इसलिए प्रभु आग बबूले हो गए, और
इस किताब में लिखा हर एक शाप इन लोगों

पर आया, 28 प्रभु ने गुस्से, जलजलाहट तथा
बहुत गुस्से में उनको उनके देश से उखाड़ा
और दूसरे देश में फेंक दिया, जैसा आज दिख
रहा है। 29 छुपी हुयी बातें प्रभु परमेश्वर के
हाथ में है, लेकिन जो बातें हम पर प्रगट हुयी
हैं, वे सदा काल के लिए हमारे तथा हमारी
आने वाली पीढ़ियों के लिए हैं, कि हम इस
नियमशास्त्र की सभी बातों को मानें।

**30** तमाम देशों के बीच रहते हुए जब
आशीष-शाप तुम्हारे ऊपर आएँ और
तुम्हें वहाँ वे बातें याद आएँ, 2 तब जब तुम
अपने बच्चों समेत प्रभु परमेश्वर की ओर
मुड़ो, और आज जिन बातों की आज्ञा दे
रहा हूँ, उन्हें तन-मन से सुनो, 3 तो तुम्हारे
प्रभु तुम्हें गुलामी से वापस लौटा लाएँगे। प्रभु
तुम पर दया करेंगे और जिन देशों में उन्होंने
तुम्हें बिखेर दिया है, वहाँ से इकट्ठा करेंगे।
4 यदि ये गुलामी में ले जाए गए लोग दुनिया
के अन्त तक भी ले जाए गए होंगे, तो प्रभु
वहाँ से इकट्ठा करके वापस ले आएँगे। 5 प्रभु
तुम्हें उस देश में ले आएँगे, जो तुम्हारे पूर्वजों
के वश में था। तुम उसे अपने वश में कर
लोगे। तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से अधिक बढ़त
मिलेगी, तथा संख्या में तुम बढ़ जाओगे 6 प्रभु
परमेश्वर तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के
मन की कड़ी परत को हटाएँगे। इस कारण
तुम अपने मन और प्राण से प्रेम करते हुए
जी सकोगे। 7 तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ये सभी
सज़ाएँ तुम्हारे दुश्मनों, सताने वालों तथा
नफ़रत करने वालों पर डालेंगे। 8 तब तुम
प्रभु की सुनोगे और उन बातों को मानोगे, जो
मैं तुम्हें आज कह रहा हूँ। 9 तुम्हारी मेहनत
पर प्रभु का हाथ रहेगा। तुम्हारे बाल-बच्चों,
मवेशियों तथा फ़सल में बढ़त रहेगी। प्रभु को
तुम्हारी भलाई करने में वैसे ही खुशी मिलेगी,
जैसी पूर्वजों को आशीष देने में मिला करती
थी। 10 ऐसा तभी हो सकेगा, जब तुम अपने
प्रभु परमेश्वर की सुन कर उन्हीं की माना
और पूरी तरह से उन्हीं की ओर मुड़ जाओ
11 ये दी गयी आज्ञाएँ आसान हैं और समझी
भी जा सकती हैं। 12 ये आज्ञाएँ स्वर्ग में नहीं
हैं कि तुम कहने लगो, “स्वर्ग जाकर इन्हें
कौन लाएगा और सुनाएगा ताकि हम वैसा ही
करें?” 13 ये आदेश समुन्दर पार भी नहीं है,
कि तुम कहो, समुन्दर पार कर कौन जाएगा
और वापस लाएगा, ताकि हम उन्हें माना
करें। 14 ये आज्ञाएँ तो तुम्हारे पास यहाँ तक
कि तुम्हारे मुँह और मन में हैं। 15 “देखो, आज
मैंने तुम्हारे सामने ज़िन्दगी-बहुतायत, मौत
और मुसीबत सभी रख दी हैं। 16 मैं तुम्हें यह
आज्ञा दे रहा हूँ कि तुम अपने प्रभु परमेश्वर
से प्रेम रखना, उनके रास्तों पर चलना। तुम
उनकी आज्ञाओं, नियमों और विधियों का
पालन करना। ऐसा करने से तुम जीवित रहने
के साथ, फूलो फलोगे। प्रभु परमेश्वर उस
देश में तुम्हें आशीष दें, जिसे अपना कर लेने
के लिए तुम दाखिल होने वाले हो। 17 लेकिन
यदि तुम रास्ते से भटक जाओ, और आज्ञाएँ
न मानो और दूसरों के देवी-देवताओं की पूजा
पाठ करने लगो, 18 तो तुम अवश्य बर्बाद हो
जाओगे। तुम जिस प्रतिज्ञा किए यर्दन पार देश
में जाकर रहने वाले हो, वहाँ अधिक दिन
न रह पाओगे। 19 आज मैं स्वर्ग और पृथ्वी
को तुम्हारे सामने गवाह करके रखता हूँ कि
मैंने तुम्हारे सामने ज़िन्दगी और मौत, आशीष
तथा शाप रखा है। इसलिए जीवन का चुनाव
कर लो ताकि अपने बाल-बच्चों सहित जीवित
रहो। 20 अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम रखना,
उनकी सुनना क्योंकि यही तुम्हारे लिए जीवन

और तुम्हारे लिए लम्बी आयु है कि जिस देश
का वायदा अब्राहम, याकूब और याकूब से
किया गया था, उसमें तुम रह सको।

# 31

इसलिए मूसा गया और उसने
ये सभी बातें इस्राएलियों को
बतलायीं। 2 वह बोला, 'मेरी उम्र एक सौ
बीस साल की हो गयी है। मेरा चलना-फिरना
मुश्किल हो गया है। मुझे प्रभु इस यर्दन
नदी को पार नहीं करने देंगे। 3 प्रभु तुम्हारी
अगुवाई करते हुए यर्दन नदी को पार कराएँगे
और अनेक देशों को तुम्हारे देखते-देखते नाश
करेंगे। उनके देश को तुम अपने कब्ज़े में
कर लोगे। प्रभु के कहने के अनुसार यहोशू
तुम सब लोगों के आगे-आगे होगा। 4 प्रभु
परमेश्वर वहाँ के रहने वालों के साथ वैसा
व्यवहार ही करेंगे जैसा एमोरियों के राजाओं
सीहोन तथा ओग तथा उनके देश के साथ
किया था। 5 उन्हें प्रभु के द्वारा तुम्हारे हाथ
में सुपुर्द कर दिया जाएगा। उनके साथ तुम
वैसा ही बर्ताव करना जैसी आज्ञा मैंने तुम्हें
दी है। 6 हिम्मत रखो, मज़बूत रहो। उन से
डरना नहीं, क्योंकि तुम्हारे साथ रहने वाले
प्रभु परमेश्वर हैं। वह तुम्हें न छोड़ेंगे। 7 मूसा
ने यहोशू को सभी इस्राएलियों के सामने से
कहा, "हिम्मत बाँधो और मज़बूत बने रहो,
क्योंकि तुम ही इन लोगों के साथ उस देश को
जाओगे जिसे देने का वायदा, प्रभु ने पूर्वजों
से किया था। तुम ही विरासत में उनको दे
सकोगे। 8 प्रभु खुद तुम्हारे आगे-आगे जाएँगे
और तुम्हारे साथ रहेंगे। वह तुम्हें न धोखा
देंगे और न ही छोड़ेंगे। इसलिए डरो मत
और हिम्मत न हारो" 9 इसलिए मूसा ने यह
लिख कर प्रभु की वाचा के बक्से को उठाने
वाले लेवीय पुरोहितों तथा इस्राएल के सभी
प्राचीनों को सौंप दी। 10 फिर मूसा ने उन्हें
यह आदेश दिया "हर सात साल के आखिर
में, अर्थात् कर्ज़ माफ़ी के साल में झोपड़ियों
के त्यौहार के समय, 11 जब सारे इस्राएली
अपने प्रभु अपने प्रभु परमेश्वर के सामने
मौजूद होने के लिए उस जगह आएँ, जिसे
वह चुन लेंगे, तब तुम पूरे इस्राएल के सामने
उनके सुनते इन नियमों आज्ञाओं को पढ़
कर सुनाना। 12 सभी आदमियों, औरतों, बच्चों
तथा अपने फ़ाटकों के अन्दर रहने वाले को
इकट्ठा करना। उन्हें सिखाना कि वे प्रभु से
डरें और दिए गए निर्देशों का पालन करने
में सावधानी बरतें। 13 उनके अबोध बच्चे भी
प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रभु का आदर सम्मान
करना सीखें। 14 तब प्रभु परमेश्वर मूसा
से बोले, "देखो, तुम अधिक दिन जीवित
नहीं रहोगे। इसलिए यहोशू को बुलवाओ
और तुम दोनों मिलाप वाले तम्बू में हाज़िर
होना ताकि मैं ज़िम्मेंदारी उसके हाथ में सौंप
सकूँ।" यहोशू और मूसा ने वैसा ही किया।
15 तब प्रभु बादल के खम्भे में होकर तम्बू
में प्रगट हुए और बादल का खम्भा तम्बू के
दरवाज़े पर ठहरा रहा। 16 प्रभु ने मूसा से
कहा, देखो, तुम अपने बापदादों के साथ
सो जाने पर हो। लेकिन ये लोग जिस देश
में जाने वाले हैं, वहाँ के देवी-देवताओं की
पूजापाठ करेंगे। वे मुझे छोड़ देंगे और मेरी
बाँधी हुयी वाचा को तोड़ देंगे। 17 तब मेरा
गुस्सा भड़केगा और मैं उन्हें छोड़ दूँगा। मैं
अपना चेहरा उन से छिपा लूँगा और वे भस्म
हो जाएँगे। उनके आए बहुत सी मुसीबतें
भी आ पड़ेंगी। उस समय वे कहेंगे, 'क्या
यह इसलिए नदी हो रहा है कि हमारे प्रभु
हमारे बीच नहीं है? 18 उस दिन मैं उन सभी
बुराईयों के कारण जो ये लोग देवी-देवताओं
की ओर मुड़ कर करेंगे अपना चेहरा छिपा
लूँगा 19 इसलिए तुम यह गीत अपने लिए

लिख लो और सभी इस्राएलियों को याद
करा देना, जिस से यह गीत इस्राएलियों
के विरोध में मेरा गवाह ठहरे। 20 बहुतायत
का देश जिस को देने की मैंने प्रतिज्ञा की
थी, वहाँ पहुँचकर, हृष्ट-पुष्ट होकर दूसरे
देवताओं की ओर मुड़ कर उनकी सेवा
करेंगे। वे मुझे ठुकरा देंगे और मेरी वाचा
तोड़ डालेंगे। 21 जब उन पर बहुत परेशानियाँ
और समस्याएँ आ पड़ेंगी, तब यह जीत एक
गवाह की तरह होगा। उनकी सन्तान के मुँह
से यह सदैव सुना जाएगा। मुझे यह मालूम
है अभी वहाँ पहुँचने से पहले उनके मन में
कौन सी बातें हैं। 22 इसलिए मूसा ने यह
गीत लिखा और इस्राएलियों को सिखा भी
दिया। 23 इसके बाद प्रभु परमेश्वर ने नून के
बेटे यहोशू पर ज़िम्मेंदारी सौंपते हुए कहा,
“हिम्मत रखो और स्थिर बने रहना, क्योंकि
तुम इस्राएलियों को उस देश में पहुँचाओगे,
जिस का वायदा मैंने उन से किया था। हाँ
मैं तुम्हारे साथ भी रहूँगा।” 24 इन सब वचनों
को किताब में लिख लेने के बाद, 25 मूसा
ने प्रभु की वाचा का सन्दूक उठाने वाले
लेवियों को आदेश दिया, 26 “व्यवस्था[a] की
यह किताब को ले जाओ और अपने प्रभु
परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के पास
रखो, कि वह वहाँ तुम्हारे विरुद्ध गवाह
हो। 27 क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग
बलवई और ज़िद्दी हो। आज जब मैं जीवित
हूँ तभी तुम विद्रोह कर रहे हो, तो मेरे मरने
के बाद कितना करोगे? 28 अपने गोत्रों के
सब प्राचीनों तथा अपने अधिकारियों को
मेरे पास लाओ। मैं उन्हें ये बातें बतलाऊँगा
तथा आकाश और पृथ्वी को उनके खिलाफ़
गवाह ठहराऊँगा। 29 मुझे मालूम है कि मेरे
मरने के बाद तुम गंदा जीवन जिओगे। जिस
रास्ते पर चलने की आज्ञा मैंने दी है उस
से भटक जाओगे। परिणामस्वरूप तुम्हें दुख
भोगना पड़ेगा, क्योंकि जो प्रभु के सामने बुरा
है, तुम वही करोगे। अपने कर्मों से तुम प्रभु
को नाराज़ करोगे” 30 तब मूसा ने सारी सभा
के सभी लोगों को शुरू से आखिर तक इस
गीत के शब्द सुना दिए।

## 32

“हे आकाश, सुनो और पृथ्वी मेरे
मुँह की बातों को सुनो। 2 बरसात
की तरह मेरी शिक्षा बरसे, मेरी बातें ओस
की तरह टपकें, उसी तरह जिस तरह हरी
घास पर फुहार और पौधों पर बौछार। 3 मैं
प्रभु के नाम का ऐलान करता हूँ, हमारे प्रभु
की लड़ाई करो! 4 वही चट्टान हैं और उनके
काम खरे हैं। उनके सभी रास्ते इन्साफ़ वाले
हैं। उन पर भरोसा रखा जा सकता है उनमें
किसी तरह की बुराई नहीं हैं। वह धर्मी और
खरे हैं। 5 उनके प्रति इस्राएलियों का बर्ताव
सही नहीं रहा है। अपनी गलती की वजह
से ये लोग उनकी औलाद नहीं हैं। ये लोग
भ्रष्ट और टेढ़ी पीढ़ी के लोग हैं। 6 हे बेवकूफ़
और बेअक्ल लोगो, तुम क्या इसी तरह से
प्रभु के साथ पेश आते हो? क्या वह तुम्हारे
पिता नहीं हैं, जिन्होंने तुम्हें दाम देकर खरीदा
हैं? तुम को उन्हीं ने बनाया है और स्थिर
भी किया है। 7 पुराने समय को याद करो,
बीते गए सालों को याद करो। तुम अपने
पिताजी से पूछो, वही तुम्हें बताएँगे। वही
अपने बुज़ुर्गों[b] से तुम्हें बतलाएँगे। 8 जब परम
प्रधान ने तमाम देशों को उनकी विरासत
दी, और इन्सान को अलग किया, उन्होंने
इस्राएलियों की गिनती के अनुसार देशों की
सरहद ठहराई। 9 क्योंकि प्रभु का स्वयं का
भाग उनकी प्रजा है, याकूब उनकी मीरास

[a] 31.26 नियमशास्त्र [b] 32.7 प्राचीनों

का ठहराया हुआ हिस्सा है। 10 उन्होंने उसे
जंगल में जहाँ जानवरों की भयंकर आवाज़
गूँजती है, पाया। उसके चारों ओर रह कर
उन्होंने उसे सम्भाला। अपने आँख की पुतली
की तरह उसे सुरक्षा दी। 11 जिस तरह उकाब
अपने घोंसले को हिलाता और अपने बच्चों के
ऊपर डोलता रहता है, वैसे ही प्रभु ने अपने
लोगों को मानो पंख फैला कर सम्भाला और
अपने परों पर बैठाया। 12 उनका मार्गदर्शन
प्रभु ही ने किया। उस समय उनके साथ
और कोई पराया देवता नहीं था। 13 पृथ्वी
की ऊँची जगहों पर उन्होंने उसे सवार
कराया, उसे उन्होंने खेतों की फ़सल खिलाई,
चट्टान में से उन्होंने उन लोगों को शहद
खिलाया। यहाँ तक कि चकमक की चट्टान
में से तेल भी चुसाया। 14 तुमने गायों का
दही, भेड़-बकरियों का दूध, मेम्नों की चर्बी,
बाशान नस्ल के मेंढ़ें, बकरों, सब से बढ़िया
गेहूँ और अंगूरों के रस का सेवन किया
15 लेकिन यशूरून[a] मोटा होकर लातें चलाने
लगा है। तुम मोटे और हष्ट-पुष्ट हो गए हो। तब
उसने अपने बनाने वाले प्रभु को छोड़ दिया,
तथा अपने मुक्ति की चट्टान को तुच्छ समझा।
16 उन्होंने दूसरों के देवताओं की उपासना
करके प्रभु में ईर्ष्या उत्पन्न की। उन लोगों ने
घिनौनी चीजों से प्रभु के गुस्से को भड़का
दिया 17 पिशाचों के लिए और देवताओं के
लिए तुमने कुर्बानी चढ़ायी। तुम्हारे पूर्वज तक
इन लोगों को नहीं मानते थे। 18 जिस चट्टान
ने तुम्हें पैदा किया, उसी को तुमने ठुकराया,
जिस प्रभु ने तुम्हें जन्म दिया, उसी को तुम
भूल गए। 19 प्रभु ने यह सब देख कर उन्हें
ठुकरा दिया, क्योंकि उनके बेटे-बेटियों ने
उन्हें आग बबूला कर दिया था। 20 तब प्रभु
ने कहा कि मैं अपना मुँह उन से फेर लूँगा
और उनकी बर्बादी देखूँगा। ये लोग गुमराह
पीढ़ी के लोग हैं, हाँ विश्वासघाती भी है।
21 जो प्रभु नहीं है, उसकी इबादत करके इन
लोगों ने मेरे मन में जलन पैदा की। अपनी
बनाई हुई मूर्तियों से उन्होंने मेरे गुस्से को
भड़का दिया इसलिए जो मेरे लोग नहीं हैं,
उनके द्वारा मैं इन में ईर्ष्या पैदा करूँगा तथा
एक बेवकूफ़ देश के लोगों के द्वारा इन का
गुस्सा भड़काऊँगा। 22 क्योंकि मेरे गुस्से की
आग भड़क चुकी है तथा अधोलोक की तह
तक जलती है, और पृथ्वी को उसकी फ़सल
के साथ भस्म करती है, तथा पहाड़ों की
नीवों में आग लगा देती हैं। 23 मैं उनके ऊपर
मुसीबत पर मुसीबत भेजूँगा। अपने तीर मैं
उन पर छोड़ूँगा। 24 वे लोग आकाल से बर्बाद
हो जाएँगे, तेज गर्मी और भयंकर बर्बादी से
उनका अन्त हो जाएगा। उन पर मैं जानवरों
के दाँत और पृथ्वी में रेंगने वाले जानवरों
का ज़हर भेजूँगा। 25 वे लोग बाहर तलवार
से मर जाएँगे और अन्दर डर से - कुँवारा
और कुँवारी दोनों, दूध पीता बच्चा और सफ़ेद
बाल वाला इन्सान। 26 मैं यह कहने ही वाला
था कि मैं उनके टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा।
मैं मनुष्यों के बीच में से उनका नामों-निशान
मिटा दूँगा। 27 मुझे यह डर था दुश्मन भड़क
उठेगा। यह भी कि विरोधी यह गलत मतलब
न लगा ले, कि हम जीत गए हैं। और यह कि
यह सब प्रभु का काम नहीं है। 28 ये लोग
बड़े अजीब हैं, उन में समझ नाम की चीज़
नहीं। 29 अच्छा होता यदि वे समझदार होते
और जीवन के अन्त के बारे में ज्ञान रखते
30 यदि उनकी चट्टान[b] ही ने उनको बेचा न
होता या प्रभु ही ने उन लोगों को छोड़ न
दिया होता, तो एक जन उनके एक हज़ार
का पीछा कैसे करता? या दो जन उनके

[a] 32.15 यरूशलेम [b] 32.30 प्रभु

दस हज़ार को कैसे खदेड़ पाते? 31 सचमुच
में उनकी चट्टान हमारी चट्टान की तरह नहीं
है, चाहे हमारे दुश्मन ही जज क्यों न हों।
32 उनकी अंगूर की लता सदोम की अंगूर की
लता में से है, तथा अमोरा के खेतों में से हैं
उनके अंगूर ज़हर भरे और गुच्छे कड़वे हैं।
33 उनकी शराब सांपों का ज़हर और नाग का
हलाहल है। 34 क्या यह मेरे भण्डार में इकट्ठा
किया हुआ और मेरे खजानों में मुहरबन्द नहीं
है? 35 बदला लेना और देना मेरे हाथ में है।
एक सही समय पर उनके पैर फ़िसल जाएँगे।
उनकी मुसीबत का समय पास में है। जो
परेशानी उन पर आने वाली है, वह जल्दी ही
आएगी। 36 जब प्रभु को दिखेगा कि उनकी
ताकत समाप्त होने वाली है और यह भी कि
कोई गुलाम और आज़ाद बचा नहीं, तब वह
अपने लोगों का इन्साफ़ करेंगे और अपने
दासों पर दया दिखाएँगे। 37 तब वह कहेंगे,
‘कहाँ रहे उनके देवता और वह चट्टान जिस
में वे शरण लेते थे? 38 उनकी चढ़ायी गयी
कुर्बानी की चर्बी को किस ने खाया? उनके
तपावन की शराब को किस ने पिया है? ये ही
उठें और तुम्हारी मदद करें। उन्हीं की शरण में
तुम वास करो। 39 देखो, मैं, हाँ, मैं ही वह हूँ।
मुझ को छोड़कर कोई और प्रभु नहीं है। मौत
और ज़िन्दगी मैं ही देता हूँ। ज़ख्म मैंने दिए है
और स्वस्थ भी मैं करूँगा। किसी में हिम्मत
नहीं, कि मेरे हाथ से छुड़ा ले। 40 निश्चित रीति
से मैं अपना हाथ ऊपर उठा कर कहता हूँ,
41 यदि मैं अपनी तेज तलवार पर सान चढ़ा
लूँ और इन्साफ़ को अपने हाथों में ले लूँ।
मैं अपने दुश्मनों और विरोधियों से बदला
लूँगा। 42 अपने तीरों को मैं खून से मतवाला
करूँगा। मेरी तलवार मांस खाएगी। वह खून
मारे गए तथा कैदियों का और वह मांस
दुश्मनों के लम्बे बाल वाले प्रधानों का सा
होगा। 43 हे देश-देश के लोगो, प्रभु की प्रजा
के साथ खुश हो, क्योंकि वह अपने दासों के
खून का बदला लेंगे। अपनी खिलाफ़त करने
वालों से बदला लेंगे।” 44 तब मूसा नून के
पुत्र यहोशू के साथ के लोगों के पास जाकर
इस गीत के शब्द सुनाए। 45 सब कुछ सुनाने
के बाद, 46 उसने उनसे कहा, " आज जन
वचनों से मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, उन पर
अपना मन लगाना। तुम अपने आने वाली
पीड़ियों को भी यही सिखाना। 47 न ये बातें
फालतू नही हैं, यह तुम्हारा जीवन हैं। इसको
मानने से तुम उस देश में अधिक समय तक
जीवित रहोगे। 48 उसी दिन याहवे ने मूसा से
यह कहा, 49 “ इस अबारीम पहाड़ अर्थात
नबो चोटी पर जो मोआब देश में यरीहो के
सामने है, चढ़कर कनान देश को देख लो,
जिसे मैं इस्राएलियों के वश में करने पर हूँ।
50 जिस तरह तुम्हारा भाई होर पहाड़ पर
मरकर अपने लोगों में मिल गया, तुम भी
इसी पर्वत पर चढ़ने के बाद मर जाओगे और
अपने लोगों में मिल जाओगे। 51 तुम दोनों ने
तो सब इस्राएलियों के बीच मरीबा कादेश
के सोते पर सीन नामक जंगल में मेरे साथ
धोखा किया , क्योंकि उन सब के सामने
मुझे पवित्र नहीं ठहराया। 52 इसलिये जो देश
मैं इस्राएलियों को देनेवाला हूँ, उसे तुम दूर
से देख सकोगे, लेकिन उसमें दाखिल न हो
सकोगे।”

## 33

अपनी मौत से पहले प्रभु के जन
मूसा ने जो आशीर्वाद इस्राएलियों
को दिया है, वह यह है: 2 वह बोला, “प्रभु
सीनै पहाड़ से आए और सेईर से उनके
लिए निकले। पारान पहाड़ पर उन्होंने अपना
तेज दिखाया और लाखों पवित्रों के बीच
में से आए। उनके दाहिने हाथ से लोगों के

लिए अग्निमय आदेश मिले। 3 वह सभी देशों
के लोगों से प्यार करते हैं। सभी अलग
किए हुए[a] लोग आपके हाथ में हैं। आपके
चरणों पर ही वे बैठे रहते हैं। आपके मुँह
से निकली बातों से सभी फ़ायदा होता है।
4 मूसा के द्वारा ही नियम-आज्ञाएँ दिए गए।
याकूब की मण्डली का वह हिस्सा ठहरी।
5 जब प्रजा के खास-खास लोग और इस्राएल
के गोत्री इकट्ठा हुए, तब वह यशूरून में राजा
हुआ। 6 "रूबेन ज़िन्दा रहे, फिर भी उसके
यहाँ के लोग कम हों।" 7 यहूदा के लिए
यह आशीर्वाद था, "हे प्रभु, आप यहूदा की
सुनें और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा
दें। अपने हाथों से वह खुद के लिए लड़ा
और आप ही उसके दुश्मनों के खिलाफ़
मददगार हो" 8 लेवी के बारे में उसने कहा,
"तुम्हारे तुम्मीम-अरीम तुम्हारे भक्त के पास
रहें। प्रभु को तुमने मस्सा में परखा और
मरीबा के सोते पर झगड़ा फ़साद किया था
9 उसने अपने माता-पिता के बारे में कहा,
'मैं उन्हें जानता ही नहीं हूँ।' अपने भाईयों
को भी उसने अपना नहीं कहा, अपने बेटों
को भी उसने इज्ज़त नहीं दी उन्होंने आपकी
बातों को माना और वाचा को बनाए रखा
10 याकूब को वे आपके नियम सिखाएँगे।
इस्राएल को आपके नियम-आज्ञाएँ। आपके
आगे वे लोग धूप जलाएँगे, आपकी वेदी
पर पूरे जानवर का होमबलि चढ़ाएँगे। 11 हे
प्रभु, उनकी दौलत पर आपका आशीर्वाद हो
तथा उनके हाथों के कामों को स्वीकार करें।
उनकी खिलाफ़त करने वाले और दुश्मनों की
कमर इस तरह तोड़ें, कि उठ ही न पाएँ।"
12 बिन्यामीन के बारे में कहा गया, "प्रभु का
प्रिय जन उनके पास सुरक्षित रहें, जो उसे दिन
भर ढाँके रखते हैं, तथा वह प्रभु के कन्धों
के बीच रहता है 13 यूसुफ़ के बारे में उसने
कहा, "प्रभु उसके देश को हर तरह से समृद्ध
करें, स्वर्ग[b] की सब से बढ़िया चीजों, ओस
एवं ज़मीन के पानी से 14 सूरज से पोषित
उपज से तथा मौसम की सर्वोत्तम उपज से
15 पुराने समय के पहाड़ों की सब से बढ़िया
वस्तुओं से, तथा सदा काल की पहाड़ियों
की बढ़िया वस्तुओं से, 16 इस पृथ्वी की सब
से बढ़िया चीजों की बहुतायत उसे प्राप्त हो
झाड़ियों में निवास करने वाले की दया से
उसे यूसुफ़ के सिर अर्थात् उसके सिर के
चाँद पर, जो अपने भाईयों में प्यार ठहरा है,
आशीर्वाद ही आशीर्वाद हो। 17 उसकी शान
पहलौठे सांड की तरह है। उसके सींग जंगली
सांड़ के सींग हैं, वह तमाम राष्ट्रों के लोगों
को एक साथ पृथ्वी के अन्त तक ढकेल
देगा। एप्रैम के लाखों लोग इस तरह के हैं
और मनश्शे के हज़ार भी।" 18 जबूलून के
बारे में उसने कहा, "हे जबूलून अपनी यात्रा
शुरू करने में और हे इस्साकार, तुम अपने
तम्बू में खुश हो। 19 देश-देश के लोगों को
वे पहाड़ पर बुलाएँगे। वे वहाँ पर बलिदान
चढ़ाएँगे। समुन्दर की समृद्धि और बालू में
छुपी हुई दौलत को वे ढूँढ लेंगे। 20 गाद के
बारे में उसने कहा, "वह धन्य है जो गाद का
विकास और उन्नति करता है। वह सिंहनी की
तरह दुबक कर रहता है। वह हाथ और सिर,
दोनों को फाड़ डालता है। 21 उसने पहला
हिस्सा अपने लिए चुना, क्योंकि वहाँ राजा
का हिस्सा सुरक्षित था। वह प्रजा के प्रधानों
के साथ मिला और उसने प्रभु के इन्साफ़
तथा नियमों को इस्राएल पर लागू किया।"
22 दान के बारे में उसने कहा, "दान तो शेर
का बच्चा है, वह बाशान से टूट पड़ता है।"
23 नप्ताली के बारे में उसने कहा, "हे नप्ताली,

[a] 33.3 पवित्र [b] 33.13 आकाश

तुम प्रभु की कृपा और आशीषों से ढके हो,
समुन्दर और दक्षिण को अपने वश में कर
लो। 24 आशेर के विषय कहा गया, “आशेर
दूसरे बेटों से ज़्यादा आशीषित हो, उस पर
अपने भाईयों की कृपा हो और वह अपना
पाँव तेल में डुबोए। 25 तुम्हारे बेड़े लोहे
और कांसे के बने हों, तथा तुम्हारे आखिरी
दिनों के अनुसार तुम्हें सुख-चैन हासिल हो
26 “अशरून के प्रभु की तरह दूसरा कोई नहीं
है। वह तुम्हारी मदद के लिए आकाश पर
तथा अपनी महानता में बादलों पर सवारी
करते हैं। 27 सनातन के प्रभु शरण लेने के लिए
जगह हैं, और नीचे सदा काल की भुजाएँ।
वह दुश्मनों को तुम्हारे देखते-देखते खदेड़
देते हैं। वह कहते हैं, ‘पूरी तरह बर्बाद कर
डालो।’ 28 इसलिए अनाज और नए दाखरस
के देश में इस्राएल बिना डर के, वरन् याकूब
का स्त्रोत सुरक्षित रहता है। उसके ऊपर के
आकाश से ओस गिरती है। 29 हे इस्राएल,
तुम आशीषित हो। हे प्रभु से मुक्ति पाई हुई
प्रजा तुम्हारे समान कौन है? वह तो तुम्हारी
मदद के लिए ढाल तथा तुम्हारे प्रताप की
तलवार है। इसलिए तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी
बड़ाई करेंगे और तुम उनके ऊँचे स्थानों को
रौंदोगे।”

**34** तब मूसा मोआब की तराई से नबो
पहाड़ की पिसगा चोटी पर जो
यरीहो के सामने है, चढ़ गया। वहीं से प्रभु
ने उसे पूरा देश दिखाया। 2 दान तक का
गिलाद, पूरा नप्ताली, एप्रैम व मनश्शे का
हिस्सा पश्चिम समुन्दर तक यहूदा का पूरा
भाग, 3 नेगेव और खजूर वाले नगर तक।
4 तब प्रभु ने उस से कहा, “यह वही देश
है, जिस के बारे में अब्राहम,इसहाक और
याकूब से यह वायदा किया था, कि मैं इसे
तुम्हारे वंश को दूँगा। मैंने इसे तुम्हें दिखा तो
दिया है, लेकिन तुम वहाँ जा न पाओगे।”
5 इसलिये मूसा वहीं मोआब में खत्म हो
गया। 6 वहीं बेत- पोर के सामने मोआब देश
की तराई में प्रभु ने उसे दफ़ना दिया। किसी
को इस बात का पता नहीं चला। 7 उस समय
मूसा की उम्र एक सौ बीस साल थी, लेकिन
उसकी ताकत कम नहीं हुई और न ही आँखों
की रोशनी कम हुई। 8 मोआब के मैदान में
इस्राएली तीस दिन तक रोते रहे। 9 नून का
बेटा यहोशू बुद्धि से भरा हुआ था। मूसा ने
उसकी जगह लेने के लिये यहोशू को अलग
किया था।इस्राएलियों ने उसकी सुनी और
उसी के मुताबिक किया भी। 10 उस समय
से मूसा की तरह इस्राएल में कोई और नबी
न हुआ, जिस से प्रभु आमने सामने बातचीत
करते हों 11 प्रभु ने उसी को मिस्र देश में
फ़िरौन, उसके सभी कार्यकर्ताओं के सामने
चिन्ह और अजीब काम कर दिखाये। 12 मूसा
ने पूरे इस्राएल की आँखों के सामने शक्ति
और डर के बड़े-बड़े काम दिखाए।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com